एम.ए. हिन्दी (MAHI)

विस्तृत पाठ्यक्रम

MAHI - 101

आदिकालीन काव्य

प्रथम खण्ड आदि काव्य

इकाई –01 पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप

1. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता
2. पृथ्वीराज रासो की भाषा
3. पृथ्वीराज रासो का काव्य रूप

इकाई –02 पृथ्वीराज रासो का काव्यत्व

1. विषय वस्तु
2. काव्य कौशल

इकाई –02 विद्यापति और उनका युग

1. विद्यापति का युग
2. विद्यावति की भाषा

इकाई –04 गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली

1. गीतिकाव्य और विद्यापति
2. गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली की विशेषताएं
3. विद्यापति पदावली में भक्ति और श्रृंगार का द्वन्द्व
4. विद्यापति पदावली की भाषा
5. परवर्ती काव्यधारा में विद्यापति का प्रभाव

द्वितीय खण्ड भक्ति काव्य –01 (निर्गुण काव्य)

इकाई –05 कबीर की विचार चेतना और प्रासंगिकता

1. कबीर साहित्य के मूल्यांकन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
2. आज के संदर्भ में कबीर का मूल्यांकन
3. कबीर पर सिद्धों और नाथों का प्रभाव
4. कबीर का दर्शन

इकाई –06 कबीर का काव्य शिल्प

1. कबीर की भाषा के विभिन्न रूप
2. कबीर की भाषा में व्यंग्य
3. कबीर के काव्य में भाव सौन्दर्य और कलात्मक सौष्ठव

इकाई –07 सूफी मत और जायसी का पदमावत

1. सूफीमत
2. जायसी और सूफीमत
3. कवि जायसी और उनका पदमावत

इकाई –08 पदमावत में लोक परंपरा और लोक जीवन

1. भारतीय काव्य परंपरा और फारसी काव्य परंपरा
2. हिन्दी प्रेमाख्यान
3. पदमावत में प्रेम कथा

4. पदमावत की प्रबंधात्मकता
5. पदमावत में लोकतत्व
6. जायसी की भाषा

नोट– MAHI-01 में व्याख्यात्मक प्रश्न आदि काव्य को छोड़कर शेष भक्तिकाव्य के पाठ्यक्रम में निहित सभी कवियों की रचनाओं से पूछे जाएँगे, जिनका सन्दर्भ, प्रसंग एवं काव्यशास्त्रीय टिप्पणियों सहित उत्तर देना होगा।

2. व्याख्या के पाठ्यक्रम हेतु रीडर – 'हिन्दी काव्य विविधा' का अवलोकन करें।

MAHI - 102

मध्यकालीन काव्य

प्रथम खण्ड – भक्ति काव्य –02 (सगुण काव्य)

इकाई –09 भक्ति आन्दोलनके संदर्भ में सूर काव्य का महत्व

1. महाकाव्य सूरदास और उनका युग
2. अष्टछाप और सूरदास
3. भक्ति आन्दोलन और सूरदास
4. सूर काव्य में प्रेमाभक्ति
5. सूरदास की भाषा और रूप विधान

इकाई –10 सूरदास के काव्य में प्रेम

1. सूर के काव्य में प्रेमानुभूति
2. सूर का वात्सल्य वर्णन
3. सूर काव्य में श्रृंगार
4. सूर की नयी उद्‌भावनाएं
5. सूर का प्रकृति वर्णन

इकाई –11 मीरा का काव्य और समाज

1. मीरा कालीन रूढ़िगत सांमंती समाज और नारी पराधीनता
2. मीरा का सामंती रूढ़ियों के प्रति विद्रोह
3. मीरा का जीवन संघर्ष
4. कृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति
5. मीरा के गिरधर नागर
6. मीरा का विरह वर्णन

इकाई –12 मीरा का काव्य सौन्दर्य

1. मीरा की कविता का विषय
2. मीरा की कविता में प्रेमानुभूति और प्रेम विह्‌वलता का चित्रण
3. मीरा की भाषा
4. मीरा की कविता का शिल्प विधान

इकाई –13 तुलसी के काव्य में युग संदर्भ

1. तुलसी के काव्य में तत्कालीन समाज
2. तुलसी की विचारधारा
3. तुलसी की राजनीतिक चेतना और राम राज्य की परिकल्पना

इकाई –14 एक कवि के रूप में तुलसीदास

1. कविता के बारे में तुलसीदास के विचार
2. मर्मस्पर्शी जीवन प्रसंगों का चित्रण
3. तुलसी के काव्य में चित्रित विस्तृत जीवन फलक
4. तुलसी की काव्य कला

द्वितीय खण्ड – रीति काव्य

इकाई –15 बिहारी के काव्य का महत्व

1. समकालीन परिवेश
2. श्रृंगार निरूपण

3. प्रकृति चित्रण
4. भक्ति और नीति
5. मुक्तक काव्य परंपरा और बिहारी
6. बिहारी की भाषा

इकाई –16 घनानंद के काव्य में स्वच्छंद चेतना

1. रीति काव्य परंपरा में घनानंद का महत्व
2. घनानद का प्रेम संबंधी दृष्टिकोण
3. भौतिक प्रेम का आध्यात्मिक प्रेम में विकास
4. घनानन्द का काव्य कौशल
5. घनानंद की काव्य भाषा

इकाई –17 पद्माकर की कविता

1. पृष्ठभूमि
2. श्रृंगार वर्णन
3. प्राकृतिक वर्णन
4. लोकजीवन का चित्रण
5. काव्य शिल्प
6. काव्य भाषा

नोट– MAHI-01 में व्याख्यात्मक प्रश्न भक्तिकाव्य एवं रीतिकाव्य के पाठ्यक्रम में निहित सभी कवियों की रचनाओं से पूछे जाएँगे, जिनका सन्दर्भ, प्रसंग एवं काव्यशास्त्रीय टिप्पणियों सहित उत्तर देना होगा।

2. व्याख्या के पाठ्यक्रम हेतु रीडर – 'हिन्दी काव्य विविधा' का अवलोकन करें।

MAHI-103 / MAHI – 03

भाषा विज्ञान , हिन्दी भाषा एवं लिपि

भाषा विज्ञान

प्रथम खण्ड – भाषा विज्ञान

इकाई –01 भाषा और सम्प्रेषण

1. संप्रेषण क्या है?
2. संप्रेषण का स्वरूप
3. संप्रेषण साधना
4. संप्रेषण का सामाजिक परिप्रेक्ष्य
5. संप्रेषण के बढ़ते चरण
6. भाषा शिक्षण में स्रप्रेंषण का उपागम

इकाई –02 भारत में भाषा चितन

1. वाक् 2 वाक्य 3. क्रिया की संकल्पना
4 पद विचार 5. ध्वनि विवेचन

इकाई –03 भाषा विज्ञान की पाश्चात्य परंपरा

1. भाषा विज्ञान का सूत्रपात
2.. तुलनात्मक भाषा विज्ञान
3. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान
4. भाषा परिवर्तन

इकाई –04 संरचनात्मक भाषाविज्ञान

1. फर्दिनांद द सस्पुर (1857–1913)
2. लियोनार्ड ब्लूमफील्ड (1887–1949)
3. संरचनात्मक भाषाविज्ञान में विश्लेषण की प्रक्रिया
4. टैग्मीमिक्स और सिस्टिमिक व्याकरण

इकाई –05 चॉम्स्की तथा रूपांतरण – निष्पादन व्याकरण

1. भाषा और व्याकरण की संकल्पना
2. रूपान्तरण निष्पादन व्याकरण के अध्ययन की प्रविधि
3. रूपांतरण निष्पादन व्याकरण के दो चरण
4. रूपांतरण निष्पादन व्याकरण की अद्यतन स्थिति

इकाई –06 समाजभाषाविज्ञान : भाषा और समाज

1. समाजभाषा विज्ञान
2. सम्पर्क में भाषाएं
3. भाषा : क्षरण अनुरक्षण और संघर्ष
4. भाषा और सामाजिक सदर्भ
5. हिन्दी में भाषा वैविध्य

इकाई –07 हिन्दी भाषा क्षेत्र

1. हिन्दी भाषा और उसका क्षेत्र
2. हिन्दी की उपभाषाएं और बोलियॉ
3. हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी
4. हिन्दी के विविध संदर्भ

द्वितीय खण्ड – हिन्दी संरचना

इकाई –08 ध्वनि संरचना : हिन्दी की समस्याएं

1. ध्वनिविज्ञान
2. खंडेतर ध्वनियॉ
3. स्वनिम विज्ञान तथा निष्पादक स्वनिम विज्ञान
4. हिन्दी की स्वनिमिक समस्याएं

इकाई –09 रूप , शब्द और पद

1. रूप की संकल्पना
2. रूपिन की संकल्पना
3. शब्द
4. शब्द के प्रकार
5. शब्द वर्ग
6. पद की संकल्पना

इकाई –10 वाक्य संरचना –।

1. वाक्य विज्ञान
2. वाक्य का स्वरूप
3. वाक्य की संरचना
4. वाक्यात्मक युक्तियॉ

इकाई –11 वाक्य संरचना –।।

1. वाक्य विश्लेषण के स्तर
2. वाक्य सांचे
3. आधारभूत वाक्य
4. व्युत्पन्न वाक्य सांचे

इकाई –12 अर्थ संरचना

1. अर्थ की प्रकृति
2. पर्यायता
3. अनेकार्थता
4. विलोमता
5. वाक्य स्तर पर अर्थ विवेचन

इकाई –13 प्रोक्ति विश्लेषण

1. भाषा प्रकार्य
2. प्रोक्ति
3. प्रोक्ति प्रारूप
4. प्रोक्ति विश्लेषण
5 पाठ
6. संसक्ति
7. पाठ्य विश्लेषण

तृतीय खण्ड– अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान

इकाई –14 तृतीय खण्ड अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान

1. मनोभाषाविज्ञान
2. बालक में संज्ञानात्मक विकास
3. भाषा अर्जन
4. भाषा अधिगम
5. वाक् विकार

इकाई –15 भाषा शिक्षण –।

1. भाषा शिक्षण और भाषा
2. भाषा शिक्षण की प्रमुख विधियॉ
3. भाषा शिक्षण और सामग्री निर्माण
4. भाषा शिक्षण की अधुनातन भूमिका

इकाई –16 भाषा शिक्षण –।।

1. उद्देश्य केन्द्रित भाषा शिक्षण
2. भाषा शिक्षण और त्रुटि विश्लेषण
3. परीक्षण और मूल्यांकन
4. अभ्यास सामग्री
5. दृश्य श्रव्य सामग्री

इकाई –17 अनुवाद

1. अनुवाद से तात्पर्य
2. भाषाविज्ञान और अनुवाद
3. अनुवाद : प्रकृति, क्षेत्र, प्रकार तथा उपयोगिता
4. अनुवाद की प्रक्रिया
5. हिन्दी में अनुवाद से संबद्ध समस्याएं तथा निदान
6. साहित्यिक अनुवाद

इकाई –18 भाषा तुलना

1. व्यतिरेकी विश्लेषण
2. भाषा त्रुटि विश्लेषण
3. भाषा तुलना का भाषावैज्ञानिक पक्ष
4. भाषा तुलना और अनुपयोग के क्षेत्र

इकाई –19 शैली विज्ञान

1. शैली क्या है?
2. शैली विज्ञान क्या है?

इकाई –20 कोश विज्ञान

1. कोश के विविध नाम
2. कोश विज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान
3. कोशों के प्रकार
4. कोश निर्माण की प्रक्रिया
5. कोशीय प्रविष्टि की संरचना

हिन्दी भाषा एवं लिपि

1. **भारोपीय परिवार और हिन्दी –** विशेषताएँ, वर्गीकरण
2. **भारतीय आर्यभाषा–** प्राचीन भारतीय आर्यभाषा , मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा, अपभ्रंश, अवहट्ट, आरंभिक हिन्दी, अपभ्रंश, अवहट्ठ और आरम्भिक हिन्दी : भाषाई अन्तर, हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग, आधुनिक आर्यभाषाएँ और हिन्दी।

3 **बोली , भाषा और काव्य–भाषा–** मध्यकालीन काव्यभाषा की विशेषताएँ, ब्रजभाषा का काव्यभाषा के रूप में विकास, खड़ीबोली के विकास में ब्रजभाषा का योगदान, खड़ीबोली के विकास में अवधी का योगदान , खड़ीबोली का साहित्यिक भाषा एवं काव्यभाषा के रूप में विकास।

4 **हिन्दी और उसकी उपभाषाएँ–** हिन्दी का अर्थ, उपभाषाएँ– राजस्थानी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, पूर्वी और पश्चिमी हिन्दी में अन्तर, बिहारी हिन्दी, पहाड़ी हिन्दी, हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ, राजस्थानी की बोलियाँ, पश्चिमी हिन्दी की बोलियाँ पूर्वी हिन्दी की बोलियाँ, बिहारी हिन्दी की बोलियाँ, पहाड़ी हिन्दी की बोलियाँ।

5 **मानक हिन्दी**

ध्वनि गठन– ध्वनि की परिभाषा, हिन्दी ध्वनियों का विकास, वर्गीकरण और विशेषताएँ।

शब्द भंडार– तत्सम, तद्भव, विदेशी, देशी, शब्दों की रचना प्रक्रिया, समास, प्रत्यय, उपसर्ग।

व्याकरणिक कोटियाँ – संज्ञा– रूप, वचन, लिंग, विशेषण , कारक, सर्वनाम, क्रिया ,क्रियाओं की काल रचना, संयुक्त क्रिया, क्रिया विशेषण।

वाक्य रचना – वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया का प्रयोग, काल, कारक चिह्नों का प्रयोग, पदक्रम, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन।

6 **देवनागरी लिपि–** देवनागरी–विकास और नामकरण, विशेषताएँ, गुण–दोष, हिन्दी भाषा का मानकीकरण और देवनागरी लिपि।

7 **राष्ट्रभाषा और राजभाषा–** अर्थ और सम्बन्ध, हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर संघर्ष, हिन्दी का राष्ट्रीय स्वरूप, हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय धरातल , हिन्दी के प्रसार में सस्थाओं का योगदान।

MAHI-104 / MAHI – 09

आधुनिक गद्य

I- उपन्यास : स्वरूप और विकास

II - भारतीय उपन्यास

प्रथम खण्ड उपन्यास के सिद्धान्त और स्वरूप–1

इकाई –01 आख्यान के विभिन्न रूप और उपन्यास

1. आख्यान ': अर्थ और परंपरा
2. उपन्यास विधा : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
3. उपन्यास के विविध भारतीय पयार्य
4. उपन्यास और यथार्थ का संबंध
5. उपन्यास की लोकप्रियता
6. उपन्यास और पाठक वर्ग
7. उपन्यास के विविध रूप

इकाई –02 उपन्यास का अर्थ और स्वरूप

1. उपन्यास का अर्थ
2. उपन्यास के विभिन्न नामांतरण
3. उपन्यास में यथार्थ और संभाव्यता
4. उपन्यास में यथार्थ की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप
5. यथार्थवाद और उपन्यास

इकाई –03 उपन्यास का उदय और उसके कारण

1. उन्नींसवीं सदी में उपन्यास
2. उपन्यास के उदय के कारण
3. नये पाठक वर्ग का उदय
4. उपन्यास में देशकाल
5. किसान चेतना और स्त्री चेतना
6. उपन्यास में नायकत्व की संकल्पना

इकाई –04 उपन्यास और अन्य विधाएँ

1. उपन्यास और महाकाव्य
2. उपन्यास और अन्य गद्य रूप
3. उपन्यास और कहानी
4. उपन्यास और आत्मकथा
5. उपन्यास और जीवनी
6. दृश्य माध्यमों के विकास का उपन्यास पर प्रभाव

द्वितीय खण्ड उपन्यास के सिद्धान्त और स्वरूप–2

इकाई –01 उपन्यास वस्तु और शिल्प

1. उपन्यास की अंतर्वस्तु
2. उपन्यास : पात्रों का विकास
3. औपन्यासिक संरचना
4. शिल्पगत वैशिष्टय का आधार

इकाई –02 उपन्यास की भाषिक संरचना

1. भाषा : रचनात्मक माध्यम

2. उपन्यास की भाषा
3. औपन्यासिक भाषा की विशिष्टता
4. बोलचाल की भाषा के विविध रंग–रूप
5. काव्य भाषा के उपकरणों का प्रयोग

इकाई –03 उपन्यास : वर्गीकरण और उसके विभिन्न आधार

1. उपन्यास की रचना क्यों वर्गीकरण के आधार
2. रचना का उद्देश्य
3. कथावस्तु का स्वरूप – मनोवैज्ञानिक कथावस्तु
4. चरित्रों के आधार पर
5. शैली के आधार पर
6. जीवन दृष्टि के आधार पर

इकाई –04 उपन्यास की आलोचना दृष्टियॉ

1. उपन्यास की आलोचना का वैचारिक आधार
2. उपन्यास और यथार्थवाद
3. उपन्यास और प्रकृतवाद
4. उपन्यास की समाजशास्त्रीय आलोचना

तृतीय खण्ड विश्व साहित्य में उपन्यास

इकाई –01 विश्व साहित्य में उपन्यास का उदय

1. विश्व में उपन्यास के उदय की प्रक्रिया
2. पूंजी और उपन्यास का अंतःसंबंध
3. प्रारंभिक उपन्यास और यात्रा की बहुस्तरीयता
4. इंग्लैण्ड का लोकतांत्रिक उभार और उपन्यास
5. एक नये ढंग की गद्यकृति पिलग्रिम्स प्रोग्रेस
6. राबिन्सन कूसोः यात्रा विवरण की औपन्यासिक अर्थवत्ता
7. अंग्रेजी उपन्यास और अठारहवीं सदी

इकाई –02 उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय उपन्यास –।

1. फ्रांसीसी उपन्यास : पृष्ठ भूमि और प्रारम्भिक रूप
2. फ्रांसीसी कथा के अन्य लेखक : प्रकृतवाद और फ्लावेयर
3. यथार्थवाद और प्रकृतवाद के बीच अन्तर
4. प्रकृतवाद और जोला

इकाई –03 उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय उपन्यास –।।

1. उन्नीसवी सदी के रूसी उपन्यास
2. जर्मन उपन्यास लेखन
3. उन्नीसवीं सदी के अंग्रेजी उपन्यास
4. अंग्रेजी उपन्यास में नारी अनुभव और चेतना का उभार
5. उपन्यास और सामाजिक गतिमयता अंतःसंबंध

इकाई –04 बीसवीं सदी के उपन्यास

1. अमरीकी उपन्यास : पृष्ठभूमि
2. बीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य
3. प्रथम विश्व युद्ध और उपन्यास में बदलाव
4. उद्योगवाद का आलोचक उपन्यासकार डी0 एच0लारेंस
5. उपन्यास में मनोवैज्ञानिक आयाम
6. साम्राज्यवाद के सीधे प्रभाव से उत्पन्न उपन्यास
7. तीसरी दुनिया के उपन्यास

चतुर्थ खण्ड भारतीय साहित्य में उपन्यास

इकाई –01 भारतीय उपन्यास की अवधारणा

1. आधुनिकता और जातीयता का द्वंद्व
2. भारतीयता का अर्थ–संदर्भ
3. उपन्यास में भारतीयता
4. जातीय उपन्यास बनाम भारतीय उपन्यास
5. राष्ट्रीय रूपक के रूप में भारतीय उपन्यास
6. भारतीय उपन्यासों में स्थानीयता
7. भारतीय उपन्यास में जातीय चेतना
8. भारतीय उपन्यास में राजनीतिक संदर्भ

इकाई –02 नवजागरण और भारतीय उपन्यास

1. भारतीय नवजागरण
2. भारतीय उपन्यास का उदय
3. भारतीय उपन्यासों में नवजागरण की अभिव्यक्ति

इकाई –03 राष्ट्रीय आन्दोलन और भारतीय उपन्यास

1. औपनिवेशिक शासन और राष्ट्रीय आंदोलन
2. भारतीय उपन्यास और राष्ट्रीय चेतना

इकाई –04 स्वातंत्र्योत्तर भारतीय उपन्यास

1. आजाद भारत का सच
2. भारतीय उपन्यास : युग को पहचानने का प्रयास
3. देश विभाजन और साम्प्रदायिकता
4. ग्रामीण जीवन का यथार्थ
5. दलित जीवन की त्रासदी
6. नारी मुक्ति और सबलीकरण
7. नगरीय परिवेश और नगरीय बोध
8. उपन्यास में इतिहास और मिथक
9. राजनीति और जीवन के अन्य रंग

पंचम खण्ड हिन्दी साहित्य में उपन्यास

इकाई –01 नवजागरण और हिन्दी उपन्यास का उदय

1. नवजागरण की अवधारणा
2. नवजागरण के विभिन्न संदर्भ
3. हिन्दी भाषी क्षेत्र में नवजागरण
4. हिन्दी उपन्यास के उदय में नवजागरण का योगदान
5. हिन्दी के आरंम्भिक उपन्यासों में नवजागरण की अभिव्यक्ति
6. प्रेमचंद के उपन्यास

इकाई –02 राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और हिन्दी उपन्यास

1. राष्ट्रीयता की अवधारणा तथा राष्ट्रीय आन्दोलन की स्थिति
2. राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण का अंतःसंबंध
3. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की अभिव्यक्ति

इकाई –03 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास

1. स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य
2. किसान मजदूर और निम्नवर्ग से संबद्ध उपन्यास
3. उच्च और मध्यवर्गीय जीवन से संबद्ध उपन्यास
4. मनोवैज्ञानिक उपन्यास

5. ऐतिहासिक और मिथकीय उपन्यास
6. आंचलिक उपन्यास
7. दलित जीवन और नारी मुक्ति से संबद्ध उपन्यास
8. उत्तरशती में हिन्दी उपन्यास की स्थिति

इकाई –04 हिन्दी उपन्यास – आलोचना का विकास

1. हिन्दी उपन्यास का उदय और आलोचना की स्थिति
2. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यासों की आलोचना
3. प्रेमचंद और उनके समकालीन उपन्यासों की आलोचना
4. स्वातंन्र्योत्तर समीक्षा और उपन्यास संबंधी आलोचना

MAHI-105 / MAHI – 04

नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

प्रथम खण्ड हिन्दी नाटक और रंगमंच – I

इकाई –01 भारतेन्दु की नाट्य दृष्टि और 'अंधेर नगरी'

1. भारतेन्दु और विभिन्न नाट्य परम्पराएं
2. भारतेन्दु की नाट्य संबंधी दृष्टि
3. भारतेन्दु द्वारा रचित विभिन्न नाटक
4. अंधेर नगरी की रचना

इकाई –02 सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में 'अंधेर नगरी'

1. भारतेन्दु युगीन समय
2. अंधेर नगरी में व्यक्त यथार्थ
3. अंधेर नगरी और भारतेन्दु का वैचारिक परिप्रेक्ष्य
4. व्यंग्य और विडम्बना के रूप में अंधेर नगरी

इकाई –03 'अंधेर नगरी' का नाट्यशिल्प

1. अंधेर नगरी : एक प्रहसन के रूप में
2. अंधेर नगरी के नाट्यशिल्प की विशेषताएं
3. अंधेर नगरी का रूप – विधान
4. भाषिक प्रयोग
5. रंगमंचीय प्रस्तुति

इकाई –04 जयशंकर प्रसाद की नाट्य दृष्टि और स्कंदगुप्त

1. प्रसाद का नाट्य संबंधी सोच
2. प्रसाद की नाट्यकला का मौलिक स्वरूप
3. 'स्कंदगुप्त' की रचनाशीलता

इकाई –05 स्कन्दगुप्त में इतिहास दृष्टि और राष्ट्रीय चेतना

1. स्कंदगुप्त में इतिहास
2. प्रसाद की इतिहास दृष्टि और वर्तमान संदर्भ
3. स्कंदगुप्त में इतिहास और कल्पना
4. स्कंदगुप्त में इतिहास और कल्पना
5. स्कंदगुप्त में चरित्र चित्रण की विशिष्टता
6. स्कंदगुप्त में रस विधान और जीवन मूल्य

इकाई –06 'स्कंदगुप्त' की रंगमंचीय संभावनाएं

1. जयशंकर प्रसाद और रंगमंच
2. स्कंदगुप्त में दृश्य योजना और रंगमंचीयता
3. स्कंदगुप्त में भाषा, संवाद और अभिनय
4. स्कंदगुप्त में गीत सृष्टि

द्वितीय खण्ड – हिन्दी नाटक और रंग मंच –II

इकाई –07 मोहन राकेश की नाट्य सृष्टि

1. मोहन राकेश का नाट्य कर्म
2. मोहन राकेश का नाट्य चिंतन
3. नाटक और रंगमंच के अंतःसंबंधों में संगति
4. मोहन राकेश और 'आधे अधूरे'

इकाई –08 सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में 'आधे अधूरे'

1. मध्यवर्गीय जीवन और 'आधे अधूरे' का कथ्य
2. स्त्री पुरूष : संबंध – विश्लेषण
3. 'आधे अधूरे' में चरित्र सृष्टि
4. 'आधे अधूरे' का परिवेश
5. 'आधे अधूरे' की भाषा और संवाद

इकाई –09 'आधे अधूरे' का नाट्य शिल्प

1. नाट्य संरचना
2. नाट्य भाषा और संप्रेषण
3. वेशभूषा
4. प्रकाश योजना और ध्वनि संकेत (संगीत)
5. रंगमंचीयता की समस्याएं और चुनौतियां
6. 'आधे अधूरे' की प्रमुख प्रस्तुतियॉ

इकाई –10 अंधायुग : मिथकीय आख्यान का पुनःसृजन

1. अंधा युगः मिथकीय आख्यान
2. 'अंधा युग' की कथ्य चेतना
3. पौराणिक आख्यान का आधुनिक संदर्भ
4. 'अंधायुग– का राजनीतिक संदर्भ
5. अंधायुग बदलते मूल्यों का संकट
6. 'अंधायुग' पर अस्तित्ववादी जीवन दर्शन का प्रभाव

इकाई –11 'अधायुग' में चरित्र सृष्टि

1. अंधायुग : चरित्र चित्रण की विधियॉ
2. 'अंधायुग' के प्रमुख पात्र
3. 'अंधायुग' के चरित्रों की प्रतीकात्मकता
4. अंधायुग' में चरित्रों का मूल्यगत संघर्ष

इकाई –12

1. काव्य नाटक के रूप में 'अंधायुग'
2. 'अंधायुग' की भाषा और संवाद योजना
3. 'अंधायुग' में रंगशिल्पगत प्रयोग
4. 'अंधायुग' की रंग प्रस्तुति

तृतीय खण्ड एकांकी और नुक्कड़ नाटक

इकाई –13 एकांकी नाटक : तॉबे के कीड़े

1. असंगत नाटक की अवधारणा
2. भुवनेश्वर के एकांकी नाटक
3. तांबे के कीड़े की प्रतीक योजना
4. तांबे के कीड़े की भाषिक विशेषता
5. प्रयोगशीलता और अभिनेयता

इकाई –14 नुक्कड़ नाटक : औरत

1. औरत की रचना
2. औरत की कथावस्तु का विवेचन
3. औरत का प्रतिपाद्य
4. औरत की रंग प्रस्तुति
5. औरत का भाषिक विवेचन

चतुर्थ खण्ड गद्य साहित्य की अन्य विधाऍं –।

इकाई –15 निबन्ध , धोखा

1. प्रतापनारायण मिश्र का लेखकीय व्यक्तित्व
2. धोखा निबंध की अंतर्वस्तु
3. निबंध पर लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव
4. निबन्ध एक प्रतिपाद्य
5. निबंध का भाषिक सौन्दर्य
6. निबंध की शैलीगत विशेषताएं

इकाई –16 निबन्ध : लोभ और प्रीति

1. रामचन्द्र शुक्ल के भाव और मनोविकार संबंधी निबन्ध
2. लोभ और प्रीति का वैचारिक पक्ष
3. लोभ और प्रीति का प्रतिपाद्य
4. लोभ और प्रीति पर लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव
5. लोभ और प्रीति पर लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव
6. लेख और प्रीति का संरचना शिल्प

इकाई –17 निबंध : कुटज

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी और उनका निबंध लेखन
2. कुटज की अंतर्वस्तु
3. ललित निबन्ध के रूप में कुटज
4. कुटज की भाषा शैली

इकाई –18 निबन्ध : संस्कृति और जातीयता

1. संस्कृति और जातीयता की अंतर्वस्तु
2. हिन्दी जाति की अवधारणा
3. संस्कृति और जातीयता का मूल्यांकन
4. लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव
5. निबंध की भाषा शैली

इकाई –19 निबन्ध : तीसरे दर्जे का श्रद्धेय

1. हरिशंकर परसाई के लेखन की विशिष्टता
2. हरिशंकर परसाई के लेखन की विशिष्टता
3. हरिशंकर परसाई का समय और व्यंग्य का महत्व
4. तीसरे दर्जे का श्रद्धेय की अंतर्वस्तु
5. तीसरे दर्जे का श्रद्धेय का संरचना शिल्प
6. तीसरे दर्जे का श्रद्धेय का प्रतिपाद्य

पंचम खण्ड गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ –।।

इकाई –20 रेखाचित्र : ठाकुरी बाबा

1. रेखाचित्र के रूप में ठाकुरी बाबा
2. ठकुरी बाबा में सामाजिक चेतना
3. ठकुरी बाबा की भाषा और शिल्प
4. ठकुरी बाबा का मूल्यांकन

इकाई –21 संस्मरण :वसंत का अग्रदूत

1. संस्मरण की अवधारणा
2. संस्मरण की अन्य साहित्यिक विधाओं से संबंध
3 हिन्दी में संस्मरण लेखन की परंपरा
4. वसंत के अग्रदूत की विशिष्टता
5. वसंत का अग्रदूत की अंतर्वस्तु

6. वसंत का अग्रदूत का संरचनात्मक वैशिष्टय

इकाई –22 जीवन : कलम का सिपाही

1. जीवनी का स्वरूप
2. जीवनी साहित्य : परंपरा और विकास
3. कलम का सिपाही : जीवनी साहित्य की अन्यतम उपलब्धि
4. कलम का सिपाही : शिल्पगत वैशिष्टय
5. कलम का सिपाही का मूल्यांकन

इकाई –23 आत्मकथा : क्या भूलूँ क्या याद करूँ

1. आत्मकथा के रूप में क्या भूलूँ क्या याद करूँ।
2. क्या भूलूँ क्या याद करूँ की अंतर्वस्तु
3. क्या भूलूँ क्या याद करूँ में लेखक के विचार
4. क्या भूलूँ क्या याद करूँ का संरचना शिल्प
5. क्या भूलूँ क्या याद करूँ का महत्व और उपयोगिता

षष्ठ खण्ड गद्य साहित्य की अन्य विधाए–।।।

इकाई –24 एकांकी नाटक : तांबे के कीड़े

1. असंगत नाटक की अवधारणा
2. भुवनेश्वर के एंकांकी नाटक
3. तॉबे के कीड़े की प्रतीक योजना
4. तॉबे के कीड़े की भाषिक विशेषता
5. प्रयोगशीलता और अभिनेयता

इकाई –25 रिपोर्ताज : अदम्य जीवन

1. विधा के रूप में रिपोर्ताज
2. रिपोर्ताज की परंपरा
3. तूफानों के बीच : एक विहंगम दृष्टि
4. अदम्य जीवन : मूल संवेदना
5. अदम्य जीवन : शिल्पगत विशेषताएं
6. अदम्य जीवन : मूल्यांकन

इकाई –26 साक्षात्कार : आक्टेवियो पॉज

1. साक्षात्कार विधा का वैशिष्टय
2. साक्षात्कारदाता पात्र के चयन का औचित्य
3. साक्षात्कार में उठे प्रश्नों का विवेचना
4. साक्षात्कार की लेखन शैली

नोट– MAHI-04 में व्याख्यात्मक प्रश्न पाठ्यक्रम में निहित नाटकों, एकांकी, नुक्कड़ नाटक एवं निबन्धों में पूछे जाएँगे जिनका सन्दर्भ और प्रसंग सहित उत्तर देना होगा।

2. 'आधे अधूरे', 'अंधा युग', 'अंधेर नगरी' तथा 'स्कन्द गुप्त' की व्याख्या हेतु मूल रचनाओं एवं 'तॉबे के कीड़े' एकांकी, 'औरत' नुक्कड़ नाटक तथा निबन्धों के लिए व्याख्यात्मक प्रश्नों हेतु रीडर– ' हिन्दी गद्य विविधा' का अवलोकन करें।

MAHI-106 / MAHI – 02

हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

प्रथम खण्ड हिन्दी साहित्य के इतिहास की भूमिका और आदिकाल

इकाई –01 काल विभाजन नामकरण

1. काल विभाजन की समस्याएँ
2. काल विभाजन के आधार
3. नामकरण के आधार
4. हिन्दी साहित्य में प्रचलित काल विभाग और नामकरण
5. आदिकाल का सीमा निर्धारण
6. आदिकाल का नामकरण
7. भक्तिकाल : काल विभाजन और नामकरण
8. रीतिकाल का सीमा निर्धारण
9. रीतिकाल नामकरण
10. आधुनिक काल की पृष्ठभूमि
11. आधुनिक संवेदना के आधार

इकाई –02 आदिकाल की पृष्ठभूमि

1. आदिकाल का स्वरूप एवं महत्व
2. अपभ्रंश का स्वरूप और विकास
3. हिन्दी भाषा का विकास
4. अपभ्रंश और हिन्दी के बीच के अंतर का प्रामाणिक आधार
5. आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि
6. आदिकालीन साहित्य का वर्गीकरण

इकाई –03 सिद्ध नाथ और जैन साहित्य

1. सिद्धों का परिचय
2. सिद्ध साहित्य
3. नाथ परम्परा
4. नाथ साहित्य
5. जैन साहित्य
6. जैन साहित्य के प्रकार
7. सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य का परवर्ती हिन्दी के विकास में योगदान

इकाई –04 रासो काव्य एवं लौकिक साहित्य

1. रासो साहित्य की प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता
2. रासो काव्य की पृष्ठभूमि
3. रासो साहित्य में विचारणीय बिन्दु
4. रासो साहित्य में कथात्मक संरचना
5. रासो साहित्य में वीर गीत
6. रासो काव्य में अभिव्यक्ति कौशल
7. लौकिक साहित्य

द्वितीय खण्ड भक्तिकालीन साहित्य

इकाई –05 भक्तिकाल की पृष्ठभूमि

1. राजनीतिक पृष्ठभूमि
2. आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि

3. धार्मिक पृष्ठभूमि
4. दार्शनिक पृष्ठभूमि
5. भक्तिकाल का उदय (विभिन्न विद्वानों के मतों की व्याख्या)
6. भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप
7. दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का उदय
8. भक्ति आंदोलन (वर्णव्यवस्था एवं नारी) आंतरिक अन्तर्विरोध

इकाई –06 निर्गुण ज्ञानमार्गी संत काव्य धारा

1. संत शब्द का अर्थ
2. संत मत
3. संत परम्परा
4. ज्ञानमार्ग : अर्थ एवं दृष्टिकोण
5. प्रमुख संत कवि
6. प्रमुख प्रवृत्तियॉ
7. अभिव्यंजना शिल्प

इकाई –07 निर्गुण प्रेममार्गी (सूफी) काव्यधारा

1. सूफी शब्द का अर्थ
2. सूफी मत और सिद्धान्त
3. प्रेमाख्यान का स्वरूप
4. सूफी काव्य की मूल प्रेरणा
5. सूफी काव्य की मूल प्रेरणा
6. सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा
7. भाव व्यंजना तथा रस निरूपण
8. सूफी रहस्यवाद
9. काव्य रूप तथा कथानक रूढ़ियॉ
10. काव्य शैली
11. काव्य भाषा, अलंकार एवं छंद विधा

इकाई –08 कृष्ण भक्ति काव्य

1. कृष्ण का विकास
2. भक्ति चिंतन
3. सगुण भक्ति
4. अष्टछाप
5. शिल्प विधान

इकाई –09 राम भक्ति काव्य

1. रामकाव्य परम्परा
2. रामकथा की प्राचीनता और विरूद्धों में सामंजस्य स्थापित करने की दृष्टि
3. राम भक्तिकाव्य और रामानन्द सम्प्रदाय
4. रामलीला परम्परा का प्रवर्तन
5. राम शक्ति भावना
6. वैष्णव शैव भक्ति आंन्दोलन और हिन्दी का भक्ति काव्य
7. हिन्दी साहित्य का भक्ति आन्दोलन : इस्लाम का प्रभाव है या प्रतिक्रिया
8. राम भक्ति काव्य के सामन्तवाद विरोधी मूल्य
9. भक्ति भावना का अर्थ सन्दर्भ
10. रामकाव्य परम्परा में लोकजीवन और लोकसंघर्ष

11. रामकाव्य में समन्वय साधना
12. तुलसी परवर्ती राम काव्य परम्परा

तृतीय खण्ड रीतिकालीन साहित्य

इकाई –10 रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि और आधार

1. रीतिकाल का नामकरण और सीमा निर्धारण
2. रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि
3. रीतिकालीन काव्य का आधार

इकाई –11 रीतिकालीन कविता का स्वरूप

1. रीतिबद्ध काव्य
2. रीतिसिद्ध काव्य
3. रीतिमुक्त काव्य
4. श्रृंगारेतर काव्य

चतुर्थ खण्ड आधुनिक साहित्य –।

इकाई –12 आधुनिक काल के साहित्य की पृष्ठभूमि

1. हिन्दी साहित्य के संदर्भ में आधुनिक काल
2. हिन्दी भाषा और गद्य का उदय
3. समाज सुधार और स्त्री स्वातंत्र्य
4. देश भक्ति और राष्ट्रवाद का विकास
5. पुनरूत्थानवाद, नवजागरण और आधुनिकता

इकाई –13 भारतेन्दु युग

1. नवजागरण और आधुनिक बोध
2. खड़ी बोली और साहित्यिक भाषा के रूप में उसका विकास
3. साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ी बोली के उपयोग का प्रारम्भ एवं विकास
4. खड़ी बोली गद्य का विकास
5. भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता और साहित्य
6. भारतेन्दु युगीन गद्य साहित्य
7. भारतेन्दु युगीन कविता

इकाई –14 द्विवेदी युग

1. स्वाधीनता आंदोलन और द्विवेदी युग का मूल चरित्र
2. 'सरस्वती' और महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका
3. द्विवेदी युगीन गद्य साहित्य
4. द्विवेदी युगीन कविता

इकाई –15 छायावाद

1. स्वच्छंदतावाद और छायावाद
2. प्रवर्तन का प्रश्न
3. परिभाषा की समस्या
4. छायावाद की मूल प्रवृत्तियॉ

पंचम खण्ड आधुनिक साहित्य –।।

इकाई –16 उत्तर छायावादी कविता

1. उत्तर छायावादी काव्य की अंतर्वस्तु
2. प्रमुख धाराएं
3. राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता
4. प्रेम और मस्ती का काव्य
5. उत्तर छायावादी काव्यभाषा व शिल्प

6. प्रमुख कवि

इकाई –17 प्रगतिशील साहित्य

1. प्रगतिशीलता का सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य
2. प्रगतिवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि
3. प्रगतिवादी आंदोलन का इतिहास
4. प्रगतिशील साहित्य का उदय
5. प्रगतिशील कविता की प्रमुख प्रवृत्तियॉ
6. प्रगतिशील कविता की शिल्पगत प्रवृत्तियां

इकाई –18 प्रयोगवाद और नयी कविता

1. प्रयोगवाद
2. प्रयोगवाद से नयी कविता के संबंध की पहचान
3. प्रमुख प्रवृत्तियॉ
    1. काव्य संबंधी पुरानी अवधारणा में बदलाव
    2. लघु मानव दर्शन में नए व्यक्तित्व की खोज
    3. काव्य की अर्थभूमि का विस्तार और व्यक्ति स्वातंत्र्य पर बल
    4. अनुभूति की ईमानदारी और प्रामाणिकता
    5. रस के प्रतिमान की अप्रासंगिकता
    6. स्वाधीनता प्राप्ति के बाद का मोहभंग
    7. प्रयोग परंपरा और आधुनिकता
    8. विसंगति और विडम्बना
    9. अस्तित्ववादी और आधुनिकतावादी स्वर
    10. प्रकृति सौन्दर्य पर नई दृष्टि
    11. काव्य रूप
    12. काव्य भाषा
    13. बिंब और प्रतीकों का नयापन
    14. छंद और लय
    15. मूल्यांकन

इकाई –19 समकालीन कविता

1. समकालीन कविता : स्वरूप और दृष्टि
2. नयी कविता की रूढ़ियों से नए काव्य सृजन में मुक्ति का प्रयास
3. समकालीन कविता और राजनीति का परिदृश्य
4. समकालीनता, तात्कालिकता और परम्परा
5. समकालीन कविता में आधुनिकता का अर्थ सन्दर्भ
6. समकालीन कविता : परिदृश्य की विशालता
7. समकालीन काव्य – सृजन की मूल प्रवृत्तियॉ या विशेषताएं
8. समकालीन कविता का शिल्प पक्ष

षष्ठ खण्ड आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य

इकाई –20 हिन्दी कथा साहित्य

1. हिन्दी कहानी
2. समकालीन हिन्दी कहानी दशा एवं दिशा

3. हिन्दी कहानी में दलित चेतना
4. हिन्दी कहानी शिल्प का विकास
5. हिन्दी उपन्यास
6. हिन्दी उपन्यास में दलित चेतना
7. हिन्दी उपन्यास – शिल्प का विकास

इकाई –21 हिन्दी नाट्य साहित्य

1. आधुनिक नाटक रचना में संघर्ष एवं अंतर्द्वन्द्व
2. हिन्दी नाटक का विकास
3. नया नाटक
4. जनवादी नाटक
5. नुक्कड़ नाटक

इकाई –22 हिन्दी आलोचना

1. आधुनिक हिन्दी आलोचना की आरम्भिक स्थिति
2. शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना
3. स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी आलोचना
4. हिन्दी आलोचना की वर्तमान स्थिति

इकाई –23 निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं

1. निबंध का विकास
2. अन्य गद्य विधाएं

इकाई –24 उर्दू साहित्य यका परिचय

1. उर्दू भाषा की उत्पत्ति
2. उर्दू साहित्य लेखन पद्य
3. दिल्ली में उर्दू साहित्य का पुनःजागरण
4. नजीर अकबराबादी तथा उर्दू साहित्य में नई धारा का विकास
5. उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दिल्ली से बाहर उर्दू काव्य का विकास
6. उर्दू साहित्य में गद्य लेखन
7. उर्दू साहित्य का विकास केन्द्र : फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना एवं नयी गद्य शैली
8. उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का उर्दू गद्य साहित्य
9. स्वतंत्रता आंदोलन का प्रारंम्भिक काल एवं उर्दू काव्य
10. उर्दू साहित्य में नई विचारधाराओं का आगमन
11. उर्दू साहित्य में शोधकार्य

सप्तम खण्ड भारतीय आर्य भाषाएं

इकाई –25 विश्व की भाषाएं और भारतीय भाषा परिवार

1. संसार की भाषाएं
2. भारत के भाषा परिवार और प्रमुख भाषाएं
3. आर्यभाषा परिवार
4. द्रविड़ परिवार
5. ऑस्ट्रो एशियाई (मुंडा) परिवार
6. तिब्बती – बर्मी परिवार
7. भारतीय भाषा क्षेत्र की परिकल्पना

इकाई –26 भारोपीय परिवार और भारतीय आर्य भाषाएं

1. भारोपीय परिवार की भाषाएं
2. भारतीय आर्यभाषाएं
3. भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण

4. भारतीय आर्यभाषाओं की विशेषताएं

इकाई –27 संस्कृत से अपभ्रंश तक

1. संस्कृत
2. पालि
3. प्राकृत
4. प्राकृत
5. अपभ्रंश

इकाई –28 आधुनिक आर्य भाषाएं और हिन्दी

1. आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास, क्षेत्र और परिचय
2. आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण
3. आधुनिक आर्य भाषाओं की विशेषताएं
4. हिन्दी भाषा क्षेत्र और बोलियों का विभाजन
5. बोलियों और भाषाओं की विशेषताएं

अष्टम खण्ड हिन्दी भाषा का विकास

इकाई –29 हिन्दी भाषा का प्रारंम्भिक विकास

1. प्रारंभिक हिन्दी (पुरानी हिन्दी)
2. हिंदवी / हिंदुई – साहित्यिक रूप
3. हिंदी की बोलियों का विकास
4. अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास
5. ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास
6. हिन्दी की बोलियों में अंतःसंबंध
7. खड़ी बोली का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास
8. उर्दू

इकाई –30 आधुनिक युग में हिन्दी भाषा का विकास

1. फोर्ट विलियम कालेज
2. हिन्दी की पत्रकारिता
3. राजा द्वय राजा शिव प्रसाद सिंह तथा राजा लक्ष्मण सिंह
4. भारतेन्दु युग
5. द्विवेदी युग
6. हिन्दी के बढ़ते चरण

इकाई –31 हिन्दी के बढ़ते चरण

1. संविधान में हिन्दी – प्रयोजनमूलक हिन्दी
2. हिन्दी की भूमिकाएं
3. हिन्दी भाषा का विकास
4. मानकीकरण का सवाल

इकाई –32 देवनागरी लिपि का विकास

1. लिपि क्या है?
2. प्राचीन भारत की लिपियाँ
3. ब्राहमी लिपि और देवनागरी का विकास
4. देवनागरी लिपि
5. मानक देवनागरी – स्थिति और समस्याएं

MAHI-107 / MAHI – 06

आधुनिक हिन्दी काव्य

प्रथम खण्ड नवजागरण काव्य

इकाई –01 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का काव्य

1. भारतेन्दु का भक्तिपरक काव्य
2. श्रृंगारपरक काव्य
3. आधुनिक काव्य
4. समाजसुधार और नवजागरण
5. साहित्य क्षेत्र में भारतेन्दु के योगदान का महत्व

इकाई –02 मैथलीशरण गुप्त का काव्य (राष्ट्रीय जागरण, नवजागरण और नारी चेतना के सन्दर्भ में)

1. गुप्त जी के काव्य के मूल स्वर
2. हिन्दी काव्य जगत में गुप्तजी का योगदान

इकाई –03 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और मैथिलीशरण गुप्त की काव्य–भाषा और शिल्प (खड़ी बोली के विकास के संदर्भ में)

1. भारतेन्दु की काव्य भाषा और शिल्प
2. मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा और काव्य शिल्प
3. भारतेन्दु और मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा और शिल्प की तुलना

द्वितीय खण्ड छायावादी काव्य (एक)

इकाई –04 जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेंतना की विशिष्टता और आधुनिक भावबोध

1. प्रसाद काव्य का अध्ययन : दृष्टि और पद्धति
2. छायावाद : युग संदर्भ
3. जय शंकर प्रसाद का महत्व आधुनिक कविता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
4. आधुनिक बोध और संवेदना : प्रसाद का काव्य
5. विशिष्ट चयन के आधार पर प्रसाद का मूल्यांकन

अ– कामायनी का श्रृद्धा सर्ग : सौन्दर्य चेतना और विश्व दृष्टि
ब– 'ऑसू' में प्रसाद की काव्यानुभूति प्रेम संवेदना
स– 'प्रलय की छाया' का विशेष पाठ

इकाई –05 जयशंकर प्रसाद की भाषा और काव्य शिल्प

1. छायावाद : काव्यभाषा और काव्यशिल्प
2. प्रसाद की काव्य भाषा
3. प्रसाद का काव्य शिल्प
4. 'काव्यपाठ' के चयन के आधार पर प्रसाद का मूल्यांकन

इकाई –06 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के काव्य का वैचारिक आधार

1. निराला काव्य की आलोचना के प्रचलित आधार
2. निराला के काव्य का वैचारिक आधार
3. विभिन्न वैचारिक आधार वाली कविताऍ

इकाई –07 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में प्रयोगशीलता की दिशाएं

1. प्रयोगशीलता के प्रेरक तत्व
2. प्रयोगशीलता के नये और पुराने का सामंजस्य
3. काव्य में प्रयोगशीलता का अर्थ
4. निराला काव्य में प्रयोगशीलता

इकाई –08 राम की शक्ति पूजा एक पाठावलोकन

1. राम की शक्तिपूजा का ऐतिहासिक संदर्भ
2. संवेगात्मक उद्देश्य
3. कविता का पाठावलोकन
4. काव्यरूप का सवाल
5. संरचनात्मक सौन्दर्य

तृतीय खण्ड छायावादी काव्य (दो) तथा छायावादोत्तर काव्य

इकाई –09 महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना

1. महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना
2. महादेवी की कविता में वेदना भाव
3. महादेवी की कविता में रहस्य भावना
4. महादेवी की कविता में प्रणय की अनुभूति
5. महादेवी की कविता में सौन्दर्य चित्रण

इकाई –10 महादेवी वर्मा की प्रतीक योजना

1. प्रतीक अर्थ और उसकी परंपरा
2. प्रतीक की आवश्यकता
3. महादेवी वर्मा के काव्य में प्रतीक योजना
4. महादेवी के प्रतीकों के विभिन्न प्रकार
5. महादेवी द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों के चार वर्ग
6. महादेवी के प्रतिनिधि और प्रिय प्रतीक

इकाई –11 सुमित्रानन्दन पंत की काव्य यात्रा के विविध चरण

1. पंत की काव्य यात्रा के विविध चरण

इकाई –12 सुमित्रानन्दन पंत का काव्य शिल्प : भाषा और शैली

1. पंत की काव्य भाषा
2. पंत की काव्य शैली
3. काव्य रूप एवं छंद विधान

इकाई –13 दिनकर के काव्य की अंतर्धाराएं

1. दिनकर का युग
2. दिनकर की राष्ट्रीय चेतना
3. सौन्दर्य और प्रेम भावना
4. दिनकर की काव्य दृष्टि का विकास

चतुर्थ खण्ड – प्रगतिशील काव्य

इकाई –14 नागार्जुन के काव्य में संवेदना के रूप

1. संवेदना क्या है?
2. संवदना के विविध रूप
3. संवेदना की जटिलता : कुछ और पक्ष

इकाई –15 नागार्जुन के काव्य का रचना–विधान

1. रचना विधान के तत्व
2. नागार्जुन और रूप प्रयोग

इकाई –16 मुक्तिबोध का जीवन दर्शन और उनकी काव्य दृष्टि (जीवन प्रक्रिया और रचना प्रक्रिया के संदर्भ में)

1. मुक्तिबोध : जीवन दर्शन और काव्य दृष्टि
2. कला की स्वायत्तता और कलात्मक अनुभूति तथा जीवनाभूति का संबंध
3. पक्षधरता साहित्य और राजनीति के संदर्भ में

4. मुक्तिबोध कृत वर्तमान सभ्यता समीक्षा
5. काव्य की रचना प्रक्रिया

इकाई –17 मुक्तिबोध का काव्य शिल्प : फैंटेसी के सन्दर्भ में

1. फैंटेसी का स्वरूप और उसकी प्रकृति
2. फैंटेसी के शिल्प की शक्ति और सीमा
3. फैंटेसी कविताओं के विश्लेषण के संदर्भ में
4. भाववादी शिल्प का यथार्थवादी दृष्टि से उपयोग
5. मुक्तिबोध द्वारा प्रयुक्त उपमा , रूपक, प्रतीक, मिथक और बिंब
6. काव्य भाषा, शब्दावली और विराम चिन्ह
7. कुछ कविताओं के शीर्षकों का आशय–अभिप्राय

इकाई –18 ''अंधेरे में'' कविता का विश्लेषण

1. अंधेरे में : विश्लेषण

इकाई –19 धूमिल

1. सुदामा पाण्डेय धूमिल : संक्षिप्त जीवन परिचय
2. धूमिल की आरम्भिक कविताएं और अकविता आंदोलन
3. धूमिल की कविता : बैलमुत्ती इबारत से लोहे के स्वाद तक
4. राजनीतिक चेतना और धूमिल की कविताएं
5. ग्रामीण बोध और धूमिल की कविता
6. धूमिल की कविता में देश की तस्वीर
7. धूमिल की कविता सम्बन्धी दृष्टिकोण
8. लम्बी कविता की परम्परा और 'पटकथा'
9. धूमिल की कविता का अभिव्यंजना कौशल

पंचम खण्ड नयी कविता –1

इकाई –20 अज्ञेय के काव्य में आधुनिक भाव–बोध

1. छायावादोत्तर कविता प्रयोजनवाद और नई कविता
2. अज्ञेय : आत्मबोध और जीवन दृष्टि
   'आंगन के पार द्वार' के बाद अज्ञेय
3. अज्ञेय की कविता आधुनिक बोध और संवेदना
4. प्रमुख कविताओं के आधार पर अज्ञेय का मूल्यांकन

इकाई –21 अज्ञेय काव्य भाषा और काव्यशिल्प

1. प्रयोगवाद और नयी कविता : काव्यभाषा और काव्यशिल्प
2. अज्ञेय की काव्यभाषा
3. काव्यशिल्प
4. प्रमुख कविताएं : काव्यभाषा और काव्यशिल्प की दृष्टि से मूल्यांकन

इकाई –22 शमशेर काव्य की विचार भूमि

1. शमशेर काव्य की विचार भूमि

इकाई –23 शमशेर का काव्य संवेदना और शिल्प

1. शमशेर के काव्य की संवेदना के आयाम
2. शमशेर की कविता : आशंसा के आयाम

षष्ठ खण्ड नयी कविता – ।।

इकाई –24 अपने समय के आर–पार देखता कविः रघुवीर सहाय

1. रघुवीर सहाय की कविता विचारवस्तु के विविध आयाम
2. समय की अवधारणा
3. कविता का वैचारिक आयाम

4. रचनात्मक लक्ष्य : जन पक्षधरता
5. नारी के प्रति दृष्टिकोण
6. रघुवीर सहाय की कविता : कुछ वैचारिक सीमाएं

इकाई –25 रघुवीर सहाय का काव्य शिल्प

1. रघुवीर सहाय की काव्यभाषा का विकास
2. रघुवीर सहाय की कविता में छंद
3. रघुवीर सहाय की काव्यभाषा में लय

इकाई –26 श्रीकांत वर्मा और उनकी कविता

1. श्रीकांत वर्मा की जीवन–दृष्टि और साहित्य दृष्टि
2. रचनात्मक संघर्ष का आरंम्भ
3. काव्य में व्यक्त राजनीतिक दृष्टि
4. कविताओं में इतिहास और वर्तमान का द्वंद्व
5. भाषा और शिल्पगत विशेषताएं

नोट– 1. व्याख्यात्मक प्रश्न पाठ्यक्रम में निहित सभी कवियों की रचनाओं से पूछे जाएँगे जिनका सन्दर्भ, प्रसंग एवं काव्यशास्त्रीय टिप्पणियों सहित उत्तर देना होगा।

2. कविताओं की व्याख्या सम्बन्धी पाठ्यक्रम जानने हेतु रीडर– 'आधुनिक काव्य विविधा' का अवलोकन करें।

MAHI-108/ MAHI – 07

उपन्यास एवं कहानी

प्रथम खण्ड 'गोदान' प्रेमचंद

इकाई –01 किसान जीवन के परिप्रेक्ष्य में गोदान

1. गोदान उपन्यास की कथायोजना
2. गोदान में भारतीय किसानों की वेदना की अभिव्यक्ति
3. गोदान के पाठक
4. गोदान में गाय का महत्व
5. किसानों का आर्थिक सामाजिक शोषण
6. होरी का स्थितियों से समझौता

इकाई –02 राष्ट्रीय आन्दोलन के संदर्भ में गोदान

1. गोदान में उपस्थित राष्ट्रीय आंदोलन
2. किसान जीवन में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव
3. 'शहरी' जीवन में राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव
4. गोदान में स्वतंत्र भारत की कल्पना
5. 'गोदान' और प्रेमचंद की जनतांत्रिक दृष्टि

इकाई –03 'गोदान' में नारी चरित्र

1. नारी जीवन के प्रति प्रेमचन्द का दृष्टिकोण
2. चरित्र चित्रण की विधि और नारी चित्रण
3. 'गोदान' में प्रस्तुत किसान नारी पात्र
4. 'गोदान' में प्रस्तुत किसान नारी पात्र
5. 'गोदान' में चित्रित मध्यमवर्गीय नारी पात्र
6. जातिव्यवस्था और दलित नारी का उत्पीड़न
7. प्रेमचंद की दृष्टि में नारीत्व की अवधारणा

द्वितीय खण्ड – 'धरती धन न अपना' : जगदीश चन्द्र , 'सूखा बरगद' : मंजूर एहतेशाम

इकाई –04 धरती धन न अपना : दलित जीवन की त्रासदी के संदर्भ में

1. धरती धन का अपना कथासूत्र
2. धरती धन न अपना में अंकित दलित जीवन के पहलू
3. धरती धन न अपनाः दलित जीवन त्रासदी के संदर्भ

इकाई –05 ''धरती धन न अपना'' चित्रांकन और आंचलिक पहलू

1. चरित्रांकन
2. 'धरती धन न अपना' : आंचलिक पहलू

इकाई –06 सूखा बरगद : मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज की मानसिकता

1. मध्यवर्गीय अतीत मोह
2. रूढ़ियों और नए मूल्यों का द्वंद्व
3. मुस्लिम मध्य वर्ग : सामाजिक आर्थिक संघर्ष
4. मध्यवर्गीय नारी का बदलता बिम्ब
5. सकारात्मक धर्मनिरपेक्ष सोच

इकाई –07 सूखा बरगद : अल्पसंख्यक समाज में असुरक्षा की भावना

1. देश विभाजन की प्रतिध्वनि
2. मुसलमानों की आत्मकेन्द्रित मानसिकता
3. इतिहास की गलत प्रस्तुति और भ्रामक समझ

4. मिथ्या आरोपों का निराकरण
5. कथ्यगत नवीनता

तृतीय खण्ड – मैला आंचल : फणीश्वरनाथ रेणु, बाणभट्ट की आत्मकथाः हजारी प्रसाद द्विवेदी

इकाई –08 मैला आंचल और आँचलिक उपन्यास की अवधारणा

1. आंचलिकता और आंचलिक उपन्यास
2. मैला आंचल आंचलिक संदर्भ
3. मैला आंचल : आंचलिकता के विविध रंग

इकाई –09 मैला आंचल : राजनीतिक संदर्भ

इकाई –10 मैला आंचल भाषा और शिल्प

1. मैला आंचल : संरचना शिल्प
2. मैला आंचल : भाषा शिल्प

इकाई –11 बाणभट्ट की आत्मकथा : भारतीय जीवनदृष्टि

1. बाणभट्ट की आत्मकथा : जीवन दृष्टि
2. बाणभट्ट की आत्मकथा : संरचना और शैली
3. संवाद योजना
4. विशिष्ट प्रसंग निर्मिति

इकाई –12 बाणभट्ट की आत्मकथा का शिल्प

1. आत्मकथात्मकता
2. रोमांस के तत्व
3. इतिहास और कल्पना का सर्जनात्मक मिश्रण

इकाई –13 बाणभट्ट की आत्मकथा की प्रासंगिकता

1. प्रासंगिकता
2. प्रेम संबंधी दृष्टिकोण
3. सामाजिक राजनीतिक संदर्भ
4. नारी चेतना के स्वर
5. मानवता की प्रतिष्ठा
6. राज्याश्रय और कवि–कलाकार की स्थिति
7. धार्मिक वर्चस्व

चतुर्थ खण्ड कहानी -I

इकाई –14 ठाकुर का कुआँ

1. कहानी का आशय
2. जातिप्रथा और छुआछूत
3. जातिभेद उन्मूलन और दलित अस्मिता का आंदोलन
4. अछूत समस्या के प्रति प्रेमचंद का जुड़ाव और प्रतिबद्धता
5. स्त्री के वर्गगत और जातिगत शोषण का चित्रण

इकाई –15 पुरस्कार : जयशंकर प्रसाद

1. राष्ट्रीय भावना और व्यक्ति चेतना
2. इच्छा और स्वीकृत मूल्यों का संघर्ष
3. मधुलिका का अंतर्द्वन्द्व
4. दो मनोभावों का सामंजस्य
5. मधुलिकाः सबल नारी चरित्र
6. पुरस्कार का शिल्प

इकाई –16 कुत्ते की पूँछ : यशपाल

1. यशपाल की कहानियों में मध्यवर्गीय संदर्भ
2. 'कुत्ते की पूँछ' कहानी की पृष्ठभूमि
3. मध्यवर्ग पर व्यंग्य
4. मध्यवर्ग में छिपे स्वार्थ की अभिव्यक्ति
5. 'कुत्ते की पूँछ' की भाषा शैली

इकाई –17 पाजेब : जैनेन्द्र कुमार

1. बालमनोविज्ञान की कहानी : 'पाजेब'
2. मध्यवर्ग : भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति
3. मध्यवर्गीय मानसिकता और बदलते नैतिक मूल्य
4. कहानी का शिल्प

इकाई –18 'रोज' : अज्ञेय

1. स्त्री जीवन को यांत्रिकता में बदलते परम्परागत तथ्य
2. स्त्री की सामाजिक स्थिति
3. कहानी का शिल्प

पंचम खण्ड समकालीन कहानी

इकाई –19 पिता : ज्ञानरंजन

1. नयी कहानी : नए और पुराने मूल्यों का द्वंन्द्व
2. साठोत्तरी कहानी का भावबोध
3. पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप
4. सामाजिक यथार्थ
5. कहानी की संरचना

इकाई –20 तिरिछ

1. कहानी का आशय
2. कहानी में अभिव्यक्त यथार्थ की प्रासंगिकता
3. शहरी आधुनिकता में लुप्त होती मानवीय संवेदना
4. 'तिरिछ' और 'पिता' कहानी के पिता की तुलना

इकाई –21 त्रिशंकु : मन्नू भंण्डारी

1. नई कहानी : आन्दोलन
2. मन्नू भण्डारी की कहानियॉ और नई कहानी
3. परंपरागत मूल्यों से मुक्ति की छटपटाहट
4. मन्नू भण्डारी की नारी दृष्टि
5. मन्नू भण्डारी की 'त्रिशंकु' पाठ बोध और प्रकिया

षष्ठ खण्ड – नई कहानी -III

इकाई –22 'चीफ की दावत' भीष्म साहनी

1. मध्यवर्गीय अवसरवादिता और मानवीय मूल्यों का विघटन
2. आधुनिकता, सुसंस्कृति का पाखंड और अवसरवादिता
3. कहानी का निहित उद्देश्य
4. कहानी का कलात्मक पक्ष

इकाई –23 कर्मनाशा की हार : शिवप्रसाद सिंह

1. कर्मनाशा की हार' कहानी का आशय
2. अंधविश्वास रूढ़ियो में जकड़ा ग्रामीण समाज
3. मानवता के बचाव का संघर्ष
4. नई कहानी में आंचलिकता का आग्रह

इकाई –24 भोलाराम का जीव : हरिशंकर परसाई

1. लेखक की सामाजिक परिवर्तन के प्रति प्रतिबद्धता
2. परसाई की रचना धर्मिता और व्यंग्य का स्वरूप
3. भ्रष्ट राजनीति का चरित्र
4. भाषा शैली – व्यंग्य का सटीक प्रयोग

इकाई –25 एक दिन का मेहमान : निर्मल वर्मा

1. स्त्री पुरूष संबंधों में पड़ती दरार
2. युगीन यथार्थ और स्त्री अस्मिता बोध की अभिव्यक्ति
3. संवेदना व शिल्प

इकाई –26 सिक्का बदल गया कृष्णा सोबती

1. सिक्का बदल गया : कथा और कथ्य
2. देश विभाजन और मानवीय संबंधों की कहानी
3. विभाजन की त्रासदी का अमानवीय अनुभव
4. साम्प्रदायिकता की विभिषिका
5. विस्थापन से उत्पन्न अलगाव की यंत्रणा

इकाई –27 यह अंत नहीं : ओम प्रकाश बाल्मीकि

1. दलित साहित्य – आन्दोलन का उद्‌भव एवं विकास
2. हिन्दी साहित्य : दलित कहानी का विकास
3. दलित चेतना का विकास : 'यह अंत नहीं'
4. दलित स्त्री अस्मिता का संघर्ष
5. पुलिस और पंचायत राज का जातिवादी चरित्र

MAHI-109 / MAHI – 08

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

प्रथम खण्ड साहित्य की अवधारणा

इकाई –01 काव्य लक्षण अथवा काव्य की परिभाषा

1. कवि कर्म से तात्पर्य
2. 'लक्षण' का लक्षण अर्थात् परिभाषा कैसी हो
3. संस्कृत आचार्यों द्वारा दिये गये काव्य लक्षण
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काव्य लक्षण
5. आधुनिक हिन्दी साहित्य लक्षण
6. कविता क्या है? नयी बहस का आरम्भ

इकाई –02 काव्य प्रेरणा और काव्य हेतु

1. काव्य सृजन किसी न किसी प्रेरणा और हेतु के परिणाम
2. संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य हेतु पर चर्चा
3. प्रतिभा
4. प्रतिभा और कल्पना
5. पश्चिम और काव्य प्रेरणा संबंधी चर्चा
6. हिन्दी में काव्य प्रेरणा और काव्य हेतु चिन्तन परम्परा
7. समाहार और निष्कर्ष

इकाई –03 काव्य प्रयोजन

1. संस्कृत के आचार्यों कवियों द्वारा निरूपित काव्य प्रयोजन
2. पाश्चात्य चिंतकों रचनाकारों द्वारा निरूपित काव्य प्रयोजन
3. हिन्दी के रचनाकारों आलोचकों के काव्य प्रयोजन से संबंधित विचार
4. मूल्यांकन

इकाई –04 शब्द शक्ति विवेचन

1. व्यापार का अर्थ
2. अभिधा शब्द – शक्ति
3. लक्षणा शब्द – शक्ति
4. व्यंजना शब्द – शक्ति
5. तात्पर्य – वृत्ति

द्वितीय खण्ड – भारतीय काव्यशास्त्र : विकास के चरण

इकाई–05 भारतीय काव्य शास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय– 1

संस्कृत काव्यशास्त्र की चिन्तन दृष्टि, रस सिद्धान्त (रस संप्रदाय), अलंकार –सिद्धान्त (अलंकार संप्रदाय), रीति–सिद्धान्त (रीति सम्प्रदाय),

इकाई–6 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय –II

ध्वनि सिद्धान्त (ध्वनि सम्प्रदाय), वक्रोक्ति सिद्धान्त (वक्रोक्ति सम्प्रदाय), औचित्य सिद्धान्त (औचित्य सम्प्रदाय)।

तृतीय खण्ड– रस – चिन्तन के विविध आयाम

इकाई–07 रस की परिभाषा, स्वरूप और रस निष्पत्ति–

'रस' शब्द का अर्थ तथा रस–चिन्तन की परम्परा, रस की परिभाषा, रस का स्वरूप, करूण रस का आस्वाद, रस की निष्पत्ति (भट्ट लोल्लट का उत्पत्तिवाद या आरोपवाद), शंकुक का अनुमितिवाद, भट्टनायक का भोगवाद, अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद, अभिनवगुप्त क`मत का महत्व, रस – सिद्धान्त की शक्ति और सीमाएं।

इकाई– 08 साधारणीकरण –

भट्टनायक द्वारा 'साधारणीकरण' शब्द का प्रयोग, साधरणीकरण से भट्टनायक का तात्पर्य 'भावकत्व व्यापार के स्वरूप' पर विचार, संस्कृत – आचार्यो द्वारा साधारणीकरण की व्याख्या और विवेचन (आचार्य अभिनवगुप्त, आचार्य विश्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ), हिन्दी विद्वानों द्वारा साधारणीकरण सम्बन्धी चिन्तन और विवेचन (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल बाबू गुलाबराय, डॉ. नगेन्द्र), रस चिन्तन पर नए सन्दर्भों में विचार और साधारणीकरण, पश्चिमी विद्वानों के काव्यानुभूति की प्रक्रिया सम्बन्धी सिद्धान्त काव्यभाषा और साधारणीकरण, पश्चिम के काव्यानुभूति की प्रक्रिया संबंधी सिद्धान्तों से साधारणीकरण की तुलना।

इकाई–09 काव्य का अधिकारी–

काव्य के अधिकारी के विषय में चर्चा की आवश्यकता, काव्य का अधिकारी कौन? काव्य के अधिकारी के लिए भारतीय काव्यशास्त्र में प्रयुक्त शब्द, भारतीय काव्यशास्त्र में सहृदय सम्बन्धी चिन्तन, पश्चिमी काव्यशास्त्र में 'काव्य का अधिकारी काव्य' का अधिकारी और आलोचक।

चतुर्थ खण्ड– पाश्चात्य काव्यशासत्र –I

इकाई–10 प्लेटो का काव्य चिन्तन–

युग परिचय, व्यक्तित्व, काव्य प्ररेणा और काव्य सत्य, काव्यसत्य और अनुकरण, प्रत्ययवाद से तात्पर्य ।

इकाई– 11 अरस्तू का साहित्य चिन्तन

अरस्तू का व्यक्तित्व, प्लेटो के आपेक्ष और अरस्तू के उत्तर, अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त , त्रासदी, विवेचन सिद्धान्त।

इकाई–12 लोंजाइनसः उदात्त की अवधारणा–

लोंजाइनस : और उनका 'पेरिइप्सुस' लोंजाइनस का उदात्त–विवेचन, उदात्त के प्रसंग और पहलू, लोंजाइनस का अवदान।

इकाई–13 जॉन ड्राइडन : युग परिवेश और आलोचना सिद्धान्त

इकाई–14 स्वच्छन्दतावादी काव्य चिन्तन : वर्ड्सवर्थ और कॉलरित

स्वच्छन्दतावाद की पूर्वपीठिका, आभिजात्यवाद और स्वच्छन्दतावाद, विलियम वर्ड्सवर्थ (कविता की परिभाषा, काव्य भाषा : अर्थ और विकास वर्ड्सवर्थ की काव्यभाषा विषयक अवधारणा और उसकी आलोचना), सैमुअल टेलर कॉलरिज (कविता की परिभाषा, कल्पना सिद्धान्त)।

इकाई–15 मैथ्यू आर्नल्ड : कला और नैतिकता

काव्य के सम्बन्ध में मैथ्यू आर्नल्ड की धारणा, उनका अवदान एवं उनकी आलोचना दृष्टि का मूल्यांकन।

पंचम खण्ड– पाश्चात्य काव्यशास्त्र – II

इकाई– 16 क्रोचे का अभिव्यंजनावाद–

वैचारिक पृष्ठभूमि, बेनेदितो क्रोचे का व्यक्तित्व, चेतना तथा उसकी क्रियाएं, अभिव्यंजना सिद्धान्त, सम्बद्ध मान्यताएं, अभिव्यंजनावादी समीक्षा पद्धति, अभिव्यंजनावाद तथा वक्रोक्ति सिद्धान्त की तुलना।

इकाई–17 टी.एस. इलियट का साहित्य – चिन्तन–

युग परिवेश, व्यक्तित्व, रोमांटिक काव्य – मूल्यों का विरोध (प्रभाववादी समीक्षा का विरोध, आलोचना का मूल प्रयोजनः रूचि – परिष्कार, आलोचना रचना केन्द्रित होनी चाहिए रचनाकार केन्द्रित नहीं), परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा, निर्वेयक्तिकता सिद्धान्त की व्याख्या, मूर्तविधान, इलियट के काव्य चिन्तन के अन्य महत्वपूर्ण पक्ष।

इकाई– 18 आई.ए.रिचर्डस का साहितय चिन्तन–

व्यक्तित्व तथा युग परिवेश, मूल्य सिद्धान्त, भाषा सिद्धान्त, अर्थ मीमांसा– चिन्तन, लच और छन्द।

इकाई–19 नयी समीक्षा (न्यू क्रिटिसिज्म) के प्रमुख सिद्धान्त–

नयी समीक्षा का प्रारम्भ, नामकरण की उपयुक्तता, नयी समीक्षा–प्रमुख स्रोत, युग परिवेश की भूमिका, प्रमुख समीक्षक, विशेष पारिभाषिक शब्द, नयी समीक्षा की प्रमुख प्रवृत्तियां, शक्ति और सीमाएं।

षष्ठ खण्ड – साहित्य सिद्धान्त और विचारधाराएं

इकाई– 20 आभिजात्यवाद एवं स्वच्छन्दतावाद–

अर्थ, परिभाषा, प्रमुख प्रवृत्तियां, इतिहास।

इकाई– 21 मनोविश्लेषणवादी आलोचना।–

सिग्मण्ड फ्रायड, एल्फ्रेड एडलर, कार्ल गुस्ताफ युंग, सहमति के बिन्दु, साहित्य, साहित्यालोचन और मनोविश्लेषण का सम्बन्ध, सृजन–प्रक्रिया के मनोरहस्य, प्रतिभा और उन्माद, वैयक्तिक प्रमिभा का मनोविश्लेषणात्मक रूप, मनोविश्लेषण और आलोचना, कला का लक्ष्य : आनन्द और भाव– परिष्कार या उदात्तीकरण, हिन्दी आलोचना पर मनोविश्लेषण का प्रभाव।

इकाई–22 मार्क्सवादी आलोचना–

वैज्ञानिक विष्व दृष्टिकोण, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र, इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा, आधार ओर अधिरचना, पूंजीपति वर्ग और वैश्वीकरण, मार्क्सवादी समालोचना का सृजनात्मक विकास, हिन्दी में मार्क्सवादी समालोचना।

इकाई –23 साहित्य चिन्तन के विविध वाद–

यथाथवाद, अतियथार्थवाद, आदर्शवाद, प्रतीकवाद, बिम्बवाद, कलावाद, अस्तित्ववाद – उदभव और विकास, प्रमुख प्रवृत्तियां तथा मान्यताएं, मूल्यांकन।

इकाई–24 साहित्य अध्ययन की प्रमुख पद्धतियॉ–

मिथकीय समीक्षा पद्धति, रूपवादी समीक्षा पठिति, संरचनवादी समीक्षा पद्धति, शैली वैज्ञानिक समीक्षा पद्धति, समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धति – भूमिका, उदभव और विकास, प्रमुख मान्यताएं एवं प्रवृत्तियां, मूल्यांकन।

इकाई–25 अस्तित्वाद, आधुनिकतावाद और उत्तर–आधुनिककतावाद अस्तित्ववाद–

अवधारणा, पृष्ठभूमि, अस्तिववाद की दो धाराएं, मूलविचार बिन्दु, अस्तित्ववाद और साहित्य आलोचना। आधुनिकतावाद – परिभाषा, आधुनिक, आधुनिकीकरण आधुनिकता तथा आधुनिकतावाद,

साहित्यिक, आधुकितावाद, अवांगार्द और अन्य प्रवृत्तियां। उत्तर आधुनिकतावाद– तात्पर्य पृष्ठभूमि और देशकाल, मूल तत्व और अवधारणाएं, विस्तार, आधुनिकतावाद बनाम उत्तर आधुनिकता, साहित्य में उत्तर – आधुनिकतावाद बनाम उत्तर आधुनिकता, साहित्य में उत्तर– आधुनिकतावाद वर्तमान परिदृश्य, उत्तर आधुनिकतावाद : पूर्वी परिदृश्य।

सप्तम खण्ड– हिन्दी आलोचना

इकाई–26 साहित्य की आधुनिक अवधारणा और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

हिन्दी आलोचना का आरम्भ और विकास, शुक्ल युगः विशुद्ध आलोचना, छायावादी आलोचना दृष्टि।

इकाई– 27 शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना– छायावाद युगः

आलोचना का स्वच्छंदतावादी पथ (छायावादी कवि – आलोचक, प्रभाववादी आलोचना की बृहत्तर त्रयी, हिन्दी आलोचना में रोमांटिसिज्म विरोधी मोड़), प्रगतिवादी आलोचना तथ आधुनिकतावदी आलोचना दृष्टि, उत्तरशती की आलोचना (आलोचना की नई जमीन तैयार करने का प्रयास, कथा साहित्य और नाटकः आलोचना की दिशा), समकालीन आलोचना : परिवर्तन के बिन्दु।

इकाई– 28 हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना और डॉ. रामविलास शर्मा

आलोचक व्यक्तित्व का निर्माण, प्रमुख पुस्तकें और उनमें निहित चिन्तन, मार्क्सवादी विचारधारा का नए ढंग से उपयोग, मूल्यांकनपरक निष्कर्ष।

इकाई–29 साहित्य की विधाएं

साहित्य विधा से तात्पर्य, साहित्य विधाओं के वर्गीकरण के आधार, प्रबन्ध काव्य अथवा निबद्ध काव्य (महाकाव्य, खण्डकाव्य), मुक्तक, गद्य (गद्य–काव्य, उपन्यास कहानी, निबन्ध, जीवनी, पत्र रिपोर्ताज आदि), दृश्य काव्य, पश्चिमी नाटक (त्रासदी, कामदी, एकांकी)।

MAHI-110/ MAHI-05

शोध का स्वरूप एवं प्रविधि

1. शोध का अर्थ एवं परम्परा
2. वैज्ञानिक अध्ययन के सोपानों का परिचय
3. शोध की वैज्ञानिक प्रणाली का वैशिष्ट्य
4. शोध के प्रकारों का अध्ययन
5. शोध और समीक्षा में अन्तर
6. शोध का अधिकारी
7. शोध कार्य : एक दृष्टि
8. वैज्ञानिक शोध के सोपानों का संक्षिप्त परिचय
9. हिन्दी में शोध के विभिन्न विषय
10. परिकल्पना के स्त्रोत
11. शोध विषय के संदर्भ में रूपरेखा निर्माण एवं सम्बन्धित उदाहरण
12. शोध सामग्री का संकलन एवं उसके स्त्रोत
13. सामग्री संकलन की पद्वति–टीप इत्यादि लेना
14. तथ्य संचय के साधन के रूप में साक्षात्कार अथवा संलाप
15. तथ्य एकत्र करने के साधन–तालिका, प्रश्नावली, अभिमत पत्र
16. सामग्री–संग्रह के साधन के रूप में प्रेक्षण पद्वति
17. संचित सामग्री की प्रामाणिकता का परीक्षण
18. शोध सामग्री का वर्गीकरण तथा विश्लेषण
19. शोध प्रबन्ध लेखन : विविध आयाम (सन्दर्भ, पाद टिप्पणी, परिशिष्ट आदि।)
20. पाठानुसंधान एवं पाठालोचन की प्रक्रिया
21. लोक साहित्य, भाषा विज्ञान एवं कोश–निर्माण सम्बन्धी शोधकार्यों की प्रविधियॉ
22. साहित्य के इतिहास लेखन एवं शोध की प्रविधि
23. ऐतिहासिक अनुसंधान की विशेषताएँ
24. शोध की भाषा सर्वेक्षण प्रणाली

शोध कार्य में व्यावहारिक कठिनाइयाँ, समाधान हेतु सुझाव

MAHI - 111

हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन

प्रथम खण्ड प्रेमचन्द : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई –01 प्रेमचन्द का व्यक्तित्व एवं जीवन दृष्टि

1. प्रेमचन्द का व्यक्तित्व
2. प्रेंमचन्द की जीवनदृष्टि

इकाई –02 प्रेम चन्द का साहित्य

1. प्रेम चन्द का कथा साहित्य
2. प्रेमचन्द के नाटक
3. विविध साहित्य
4. वैचारिक साहित्य

इकाई –03 प्रेमचन्द की साहित्यिक मान्यताएं

1. प्रेमचन्द के साहित्य सम्बन्धी विचार

इकाई –04 प्रेमचन्द के उपन्यास और हिन्दी आलोचना

1. प्रेमचन्द की समकालीन आलोचना
2. परवर्ती आलोचना (1936–60)
3. सन साठ के बाद क आलोचना
4. सन अस्सी के बाद की आलोचना

द्वितीय खण्ड सेवासदन

इकाई –05 सेवासदन : अंर्तवस्तु का विश्लेषण

1. 'सेवासदन' युगीन भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य
2. भारतीय समाज की वर्ग संरचना और मध्यवर्ग की स्थिति
3. प्रेमचन्द की सामाजिक चिन्ता : नारी मुक्ति के संदर्भ में
4. 'सेवासदन' में विवाह संस्था
5 विधवा समस्या
6. वेश्या समस्या
7. 'सेवासदन'में अभिव्यक्त अन्य समस्याएं

इकाई –06 सेवासदन : शिल्प संरचना (औपन्यासिक शिल्प)

1. वस्तु और रूप का संबंध
2. शिल्प की तलाश का प्रश्न
3. 'सेवासदन' का वस्तु संगठन और उसकी औपन्यासिकता
4. पात्र संरचना और भाषा की समस्या
5. प्रभावन्विती का प्रश्न और शीर्षक की सार्थकता
6. प्रेमचन्द की रचना दृष्टि

इकाई –07 सेवासदन की नायिका (सुमन)

1. सुमन : दरोगा कृष्णचन्द्र की कन्या के रूप में
2. सुमन : पं. गजाधर की पत्नी के रूप में
3. सुमन : वेश्या के रूप में

4 सुमन : विधवाश्रम की सेविका के रूप में
5. सुमन : परिवार की सदस्या के रूप में
6. सुमन : सेवासदन की संचालिका के रूप में
7. सुमन के चरित्रांकन में निहित प्रेमचंद का उद्देश्य

तृतीय खण्ड– प्रेमाश्रम

इकाई –08 प्रेमाश्रम और कृषि समस्या

1. प्रेमाश्रम के रचनाकाल में खेतिहर समाज की स्थिति और गति
2. समस्या का अवलोकन बिन्दु
3. समस्या के विभिन्न पहलुओं की शिनाख्त
4. समस्या का समाधान

इकाई –09 प्रेमाश्रमयुगीन भारतीय समाज और प्रेमचन्द का आदर्शवाद

1. प्रेमचन्द की उपन्यास दृष्टि : आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
2. प्रेमाश्रम में तत्कालीन समाज की तस्वीर
3. कथाकार का आदर्शवाद

इकाई –10 'प्रेमाश्रम' का औपन्यासिक शिल्प

1. प्रेंमाश्रम' की कथावस्तु एवं कथा संयोजन
2. 'प्रेंमाश्रम' में सामाजिक सांस्कृतिक चित्रण
3. 'प्रेमाश्रम' की पात्र योजना
4. भाषिक योजना

इकाई –11 ज्ञानशंकर का चरित्र

1. ज्ञानशंकर के चरित्र : विधान में प्रेमचंद की दृष्टि
2. प्रमुख पारिवारिक सदस्यों के साथ ज्ञानशंकर का संबंध
3. ज्ञान शंकर : एक जमींदार के रूप में
4. ज्ञान शंकर की चारित्रिक विशेषताएं
5. ज्ञान शंकर की जीवन दृष्टि

चतुर्थ खण्ड रंगभूमि

इकाई –12 'रंगभूमि' और औद्योगीकरण की समस्या

1. औद्योगीकरण तथा भारत में उसका महत्व
2. उपन्यास की मुख्य विषय वस्तु
3. अंग्रेजी राज की भूमिका

इकाई –13 'रंगभूमि' पर स्वाधीनता आंदोलन और गॉधीवाद का प्रभाव

1. स्वाधीनता आंदोलन का स्वरूप एवं पृष्ठभूमि
2. 'रंगभूमि' में अंग्रेज
3. अंग्रेजों के समर्थकों की स्थिति
4. 'रंगभूमि' में स्वाधीनता आंदोलन
5. सूरदास और असहयोग

इकाई –14 'रंगभूमि' का औपन्यासिक शिल्प

1. 'रंगभूमि' में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
2. प्रेमचन्द की वर्णन कला
3. रंगभूमि का ढांचा
4. रंगभूमि के पाठक
5. भाषिक संरचना

इकाई –15 सूरदास का चरित्र

1. 'रंगभूमि' में सूरदास का स्थान एवं महत्व

2. सूरदास और गॉधीजी
3. सूरदास की विशिष्टता

इकाई –16 'गबन' और राष्ट्रीय आन्दोलन

1. प्रेमचन्द की रचना का उद्देश्य और 'गबन'
2. 'गबन' में राष्ट्रीय आन्दोलन के चित्रण का ऐतिहासिक संदर्भ
3. 'गबन' और राष्ट्रीय आन्दोलन में मध्यवर्ग की भूमिका
4. 'गबन' और राष्ट्रीय आन्दोलन में निम्न वर्गों की दृष्टि
5. 'गबन' में चित्रित राष्ट्रीय आन्दोलन और महिलाएं
6. राष्ट्रीय आन्दोलन में पुलिस तथा नौकरशाही की भूमिका का चित्रण

इकाई –17 'गबन' और मध्यर्गीय समाज

1. 'गबन' का रचनात्मक उद्देश्य
2. मध्यवर्गीय परिवार की कथा
3. 'गबन' के पात्र

इकाई –18 'गबन' का औपन्यासिक शिल्प

1. उपन्यास का ढॉचा : कथानक
2. 'गबन' का कथानक : घटना प्रधान, चरित्र प्रधान या नाटकीय
3. शिल्प की प्रविधियॉ
4. आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
5. 'गबन' की भाषा।

MAHI - 112

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रथम खण्ड झूठा सच

इकाई –01 यशपाल का उपन्यास साहित्य और 'झूठा सच'

1. दादा कॉमरेड 2. देशद्रोही 3. दिव्या
4. पार्टी कॉमरेड 5. मनुष्य के रूप 6. अमिता
7. झूठा सच 8. 'झूठा सच' के बाद के तीन लघु उपन्यास : बारह घंटे, अप्सरा का श्राप और क्यों फॅसे
9. मेरी तेरी उसकी बात

इकाई –02 देश का विभाजन और झूठा सच

1. विभाजन और ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीति
2. विभाजन की राजनैतिक पृष्ठभूमि
3. विभाजन सम्बन्धी अन्य उपन्यास और 'झूठा सच'
4. विभाजन से प्रभावित पंजाब और उसके सामाजिक जन जीवन का अंकन
5. सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, साझा संस्कृति की विरासत

इकाई –03 देश का भविष्य और 'झूठा सच'

1. मोहभंग की व्यापकता
2. सत्ता की राजनीति और कांग्रेसी अवसरवाद
3. पुनर्वास का संघर्ष और प्रक्रिया
4. राजनैतिक मूल्यहीनता के अन्य रूप
5. सरलीकृत आशावाद के अरोप पर विचार
6. उपन्यास के धारावाहिक प्रकाशन के प्रभाव की पड़ताल

इकाई –04 औपन्यासिक महाकाव्य के रूप में 'झूठा सच'

1. औपन्यासिक महाकाव्य की अवधारणाः युगाभिव्यक्ति
2. व्यापकता का संदर्भ
3. जीवन का विस्तार , वैविध्य और सघनता
4. जनजीवन का अंकन
5. कवि दृष्टि के अभाव का आरोप
6. युग की अभिव्यक्ति और समय की कसौटी

द्वितीय खण्ड जिन्दगीनामा

इकाई –05 कृष्णा सोबती का कथा साहित्य और 'जिन्दगीनामा'

1. कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. कृष्णा सोबती का कथा साहित्य
3. कृष्णा सोबती का जिन्दगीनामा

इकाई –06 'जिन्दगीनामा' उपन्यास की अंतर्वस्तु और कथा शिल्प

1. अन्तर्वस्तु और कथाशिल्प का महत्व
2. 'जिन्दगीनामा' : अन्तर्वस्तु
3. 'जिन्दगीनामा' कथाशिल्प

इकाई –07 'जिन्दगीनामा' : प्रमुख पात्र एवं चरित्र चित्रण

1. चरित्र सृष्टि और जीवन दृष्टि का महत्व
2. 'जिन्दगीनामा' में चरित्र सृष्टि
3. 'जिन्दगीनामा' जीवन दृष्टि

इकाई –08 परिवेश और भाषा

1. परिवेश चित्रण और भाषा सृजन का महत्व
2. जिन्दगीनामा में परिवेश चित्रण
3. जिन्दगीनामा : भाषा सृजन

तृतीय खण्ड सूरज का सातवॉ घोड़ा

इकाई –09 धर्मवीर भारती का कथा साहित्य और 'सूरज का सातवॉ घोड़ा'

1. सूक्ष्म अनुभवपरक धरा के उपन्यास
2. धर्मवीर भारती का कथा साहित्य

इकाई –10 औपन्यासिक शिल्प 'सूरज का सातवॉ घोड़ा'

1. 'सूरज का सातवॉ घोड़ा' की अन्तर्वस्तु एवं शिल्प संबंधी पृष्ठभूमि
2. 'सूरज का सातवॉ घोड़ा' का वस्तु संगठन
3. पात्र योजना और उसका यथोचित निर्वाह
4. भाषिक शिल्प

इकाई –11 सूरज का सातवॉ घोड़ा : चरित्र सृष्टि

1. चरित्र चित्रण की प्रविधियॉ
2. स्त्री पुरूष संबंध और ''सूरज का सातवॉ घोड़ा''
3. माणिक मुल्ला और कथानक
4. नारी चरित्र सृष्टि
5. नारी चरित्रों का विद्रोह

इकाई –12 भारतीय की लेखकीय दृष्टि

1. जीवन दृष्टि (समाज और व्यक्ति के प्रति)
2. अन्य रचनाओं में व्यक्त लेखकीय दृष्टि
3. किशोर सुलभ रोमानी (भावुक) दृष्टि की सीमाएं एवं संभावनाएं
4. विचार और रचना का समायोजन
5. 'सूरज का सातवॉ घोड़ा' उपन्यास की अंतःप्रेरणा
6. 'सूरज का सावतॉ घोड़ा' उपन्यास की अंतःप्रेरणा
7. वर्णन प्रधानता और अनुभवपरकता के सामंजस्य में नवीनता
8. नये शैली शिल्प का प्रयोग

चतृर्थ खण्ड – राग दरबारी

इकाई –13 स्वातंत्र्योत्तर भारत और 'राग दरबारी'

1. श्रीलाल शुक्ल के अन्य उपन्यास
2. स्वातंत्र्योत्तर भारत का समाज राजनीतिक परिदृश्य
3. 'राग दरबारी' और स्वातंत्र्योत्तर भारत का यथार्थ

इकाई –14 'राग दरबारी' में व्यंग्य

1. व्यंग्य की परिभाषा और उसकी विभिन्न छायाएं
2. 'राग दरबारी' में प्रयुक्त व्यंग्य का स्वरूप
3. 'राग दरबारी' का यथार्थ और व्यंग्य शैली की सार्थकता
4. 'राग दरबारी' में प्रयुक्त व्यंग्य की सीमाएं

इकाई –15 'राग दरबारी' की अन्तर्वस्तु संरचना शिल्प और

1. 'राग दरबारी' की अन्तर्वस्तु
2 'राग दरबारी' का संरचना शिल्प
3. व्यंग्य शैली और भाषिक भंगिमा
4. भाषा प्रयोग के विविध रूप

इकाई –16 'राग दरबारी के पात्र'

1. 'राग दरबारी' एक सामानयचरित्रोपाख्यान
2. 'राग दरबारी' के विशिष्ट पात्र
3. चरित्रों की प्रतिनिधिकता और अन्य चरित्र
4. 'राग दरबारी' का चरित्र विधान रचनाकार की मूल्य दृष्टि

एम.ए. हिन्दी (MAHI)

MAHI – 01

हिन्दी काव्य (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

प्रथम खण्ड आदि काव्य

इकाई –01 पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप

1. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता
2. पृथ्वीराज रासो की भाषा
3. पृथ्वीराज रासो का काव्य रूप

इकाई –02 पृथ्वीराज रासो का काव्यत्व

1. विषय वस्तु
2. काव्य कौशल

इकाई –02 विद्यापति और उनका युग

1. विद्यापति का युग
2. विद्यावति की भाषा

इकाई –04 गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली

1. गीतिकाव्य और विद्यापति
2. गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली की विशेषताएं
3. विद्यापति पदावली में भक्ति और श्रृंगार का द्वन्द्व
4. विद्यापति पदावली की भाषा
5. परवर्ती काव्यधारा में विद्यापति का प्रभाव

द्वितीय खण्ड भक्ति काव्य –01 (निर्गुण काव्य)

इकाई –05 कबीर की विचार चेतना और प्रासंगिकता

1. कबीर साहित्य के मूल्यांकन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
2. आज के संदर्भ में कबीर का मूल्यांकन
3. कबीर पर सिद्धों और नाथों का प्रभाव
4. कबीर का दर्शन

इकाई –06 कबीर का काव्य शिल्प

1. कबीर की भाषा के विभिन्न रूप
2. कबीर की भाषा में व्यंग्य
3. कबीर के काव्य में भाव सौन्दर्य और कलात्मक सौष्ठव

इकाई –07 सूफी मत और जायसी का पदमावत

1. सूफीमत
2. जायसी और सूफीमत
3. कवि जायसी और उनका पदमावत

इकाई –08 पदमावत में लोक परंपरा और लोक जीवन

1. भारतीय काव्य परंपरा और फारसी काव्य परंपरा
2. हिन्दी प्रेमाख्यान
3. पदमावत में प्रेम कथा
4. पदमावत की प्रबंधात्मकता
5. पदमावत में लोकतत्व
6. जायसी की भाषा

तृतीय खण्ड भक्ति काव्य –02 (सगुण काव्य)

इकाई –09 भक्ति आन्दोलनके संदर्भ में सूर काव्य का महत्व

1. महाकाव्य सूरदास और उनका युग
2. अष्टछाप और सूरदास
3. भक्ति आन्दोलन और सूरदास
4. सूर काव्य में प्रेमाभक्ति
5. सूरदास की भाषा और रूप विधान

इकाई –10 सूरदास के काव्य में प्रेम

1. सूर के काव्य में प्रेमानुभूति
2. सूर का वात्सल्य वर्णन
3. सूर काव्य में श्रृंगार
4. सूर की नयी उद्‌भावनाएं
5. सूर का प्रकृति वर्णन

इकाई –11 मीरा का काव्य और समाज

1. मीरा कालीन रूढ़िगत सांमंती समाज और नारी पराधीनता
2. मीरा का सामंती रूढ़ियों के प्रति विद्रोह
3. मीरा का जीवन संघर्ष
4. कृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति
5. मीरा के गिरधर नागर
6. मीरा का विरह वर्णन

इकाई –12 मीरा का काव्य सौन्दर्य

1. मीरा की कविता का विषय
2. मीरा की कविता में प्रेमानुभूति और प्रेम विह्‌वलता का चित्रण
3. मीरा की भाषा
4. मीरा की कविता का शिल्प विधान

इकाई –13 तुलसी के काव्य में युग संदर्भ

1. तुलसी के काव्य में तत्कालीन समाज
2. तुलसी की विचारधारा
3. तुलसी की राजनीतिक चेतना और राम राज्य की परिकल्पना

इकाई –14 एक कवि के रूप में तुलसीदास

1. कविता के बारे में तुलसीदास के विचार
2. मर्मस्पर्शी जीवन प्रसंगों का चित्रण
3. तुलसी के काव्य में चित्रित विस्तृत जीवन फलक
4. तुलसी की काव्य कला

चतुर्थ खण्ड रीति काव्य

इकाई –15 बिहारी के काव्य का महत्व

1. समकालीन परिवेश
2. श्रृंगार निरूपण
3. प्रकृति चित्रण
4. भक्ति और नीति
5. मुक्तक काव्य परंपरा और बिहारी
6. बिहारी की भाषा

इकाई –16 घनानंद के काव्य में स्वच्छंद चेतना

1. रीति काव्य परंपरा में घनानंद का महत्व
2. घनानद का प्रेम संबंधी दृष्टिकोण
3. भौतिक प्रेम का आध्यात्मिक प्रेम में विकास
4. घनानन्द का काव्य कौशल
5. घनानंद की काव्य भाषा

इकाई –17 पद्माकर की कविता

1. पृष्ठभूमि
2. श्रृंगार वर्णन
3. प्राकृतिक वर्णन
4. लोकजीवन का चित्रण
5. काव्य शिल्प
6. काव्य भाषा

नोट– MAHI-01 में व्याख्यात्मक प्रश्न आदि काव्य को छोड़कर शेष भक्तिकाव्य एवं रीतिकाव्य के पाठ्यक्रम में निहित सभी कवियों की रचनाओं से पूछे जाएँगे, जिनका सन्दर्भ, प्रसंग एवं काव्यशास्त्रीय टिप्पणियों सहित उत्तर देना होगा।

2. व्याख्या के पाठ्यक्रम हेतु रीडर – 'हिन्दी काव्य विविधा' का अवलोकन करें।

MAHI – 10

हिन्दी उपन्यास

I– प्रेमचन्द का विशेष अध्ययन

II – प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रेम चन्द का विशेष अध्ययन

प्रथम खण्ड प्रेमचन्द : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई –01 प्रेमचन्द का व्यक्तित्व एवं जीवन दृष्टि

1. प्रेमचन्द का व्यक्तित्व
2. प्रेंमचन्द की जीवनदृष्टि

इकाई –02 प्रेम चन्द का साहित्य

1. प्रेम चन्द का कथा साहित्य
2. प्रेमचन्द के नाटक
3. विविध साहित्य
4. वैचारिक साहित्य

इकाई –03 प्रेमचन्द की साहित्यिक मान्यताएं

1. प्रेमचन्द के साहित्य सम्बन्धी विचार

इकाई –04 प्रेमचन्द के उपन्यास और हिन्दी आलोचना

1. प्रेमचन्द की समकालीन आलोचना
2. परवर्ती आलोचना (1936–60)
3. सन साठ के बाद क आलोचना
4. सन अस्सी के बाद की आलोचना

द्वितीय खण्ड सेवासदन

इकाई –05 सेवासदन : अंर्तवस्तु का विश्लेषण

1. 'सेवासदन' युगीन भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य
2. भारतीय समाज की वर्ग संरचना और मध्यवर्ग की स्थिति
3. प्रेमचन्द की सामाजिक चिन्ता : नारी मुक्ति के संदर्भ में
4. 'सेवासदन' में विवाह संस्था
5 विधवा समस्या
6. वेश्या समस्या
7. 'सेवासदन'में अभिव्यक्त अन्य समस्याएं

इकाई –06 सेवासदन : शिल्प संरचना (औपन्यासिक शिल्प)

1. वस्तु और रूप का संबंध
2. शिल्प की तलाश का प्रश्न
3. 'सेवासदन' का वस्तु संगठन और उसकी औपन्यासिकता
4. पात्र संरचना और भाषा की समस्या
5. प्रभावन्विती का प्रश्न और शीर्षक की सार्थकता
6. प्रेमचन्द की रचना दृष्टि

इकाई –07 सेवासदन की नायिका (सुमन)

1. सुमन : दरोगा कृष्णचन्द्र की कन्या के रूप में

2. सुमन : पं. गजाधर की पत्नी के रूप में
3. सुमन : वेश्या के रूप में
4 सुमन : विधवाश्रम की सेविका के रूप में
5. सुमन : परिवार की सदस्या के रूप में
6. सुमन : सेवासदन की संचालिका के रूप में
7. सुमन के चरित्रांकन में निहित प्रेमचंद का उद्देश्य

तृतीय खण्ड– प्रेमाश्रम

इकाई –08 प्रेमाश्रम और कृषि समस्या

1. प्रेमाश्रम के रचनाकाल में खेतिहर समाज की स्थिति और गति
2. समस्या का अवलोकन बिन्दु
3. समस्या के विभिन्न पहलुओं की शिनाख्त
4. समस्या का समाधान

इकाई –09 प्रेमाश्रमयुगीन भारतीय समाज और प्रेमचन्द का आदर्शवाद

1. प्रेमचन्द की उपन्यास दृष्टि : आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
2. प्रेमाश्रम में तत्कालीन समाज की तस्वीर
3. कथाकार का आदर्शवाद

इकाई –10 'प्रेमाश्रम' का औपन्यासिक शिल्प

1. प्रेंमाश्रम' की कथावस्तु एवं कथा संयोजन
2. 'प्रेंमाश्रम' में सामाजिक सांस्कृतिक चित्रण
3. 'प्रेमाश्रम' की पात्र योजना
4. भाषिक योजना

इकाई –11 ज्ञानशंकर का चरित्र

1. ज्ञानशंकर के चरित्र : विधान में प्रेमचंद की दृष्टि
2. प्रमुख पारिवारिक सदस्यों के साथ ज्ञानशंकर का संबंध
3. ज्ञान शंकर : एक जमींदार के रूप में
4. ज्ञान शंकर की चारित्रिक विशेषताएं
5. ज्ञान शंकर की जीवन दृष्टि

चतुर्थ खण्ड रंगभूमि

इकाई –12 'रंगभूमि' और औद्योगीकरण की समस्या

1. औद्योगीकरण तथा भारत में उसका महत्व
2. उपन्यास की मुख्य विषय वस्तु
3. अंग्रेजी राज की भूमिका

इकाई –13 'रंगभूमि' पर स्वाधीनता आंदोलन और गॉधीवाद का प्रभाव

1. स्वाधीनता आंदोलन का स्वरूप एवं पृष्ठभूमि
2. 'रंगभूमि' में अंग्रेज
3. अंग्रेजों के समर्थकों की स्थिति
4. 'रंगभूमि' में स्वाधीनता आंदोलन
5. सूरदास और असहयोग

इकाई –14 'रंगभूमि' का औपन्यासिक शिल्प

1. 'रंगभूमि' में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
2. प्रेमचन्द की वर्णन कला
3. रंगभूमि का ढांचा
4. रंगभूमि के पाठक
5. भाषिक संरचना

इकाई –15 सूरदास का चरित्र

1. 'रंगभूमि' में सूरदास का स्थान एवं महत्व
2. सूरदास और गॉधीजी
3. सूरदास की विशिष्टता

इकाई –16 'गबन' और राष्ट्रीय आन्दोलन

1. प्रेमचन्द की रचना का उद्देश्य और 'गबन'
2. 'गबन' में राष्ट्रीय आन्दोलन के चित्रण का ऐतिहासिक संदर्भ
3. 'गबन' और राष्ट्रीय आन्दोलन में मध्यवर्ग की भूमिका
4. 'गबन' और राष्ट्रीय आन्दोलन में निम्न वर्गों की दृष्टि
5. 'गबन' में चित्रित राष्ट्रीय आन्दोलन और महिलाएं
6. राष्ट्रीय आन्दोलन में पुलिस तथा नौकरशाही की भूमिका का चित्रण

इकाई –17 'गबन' और मध्यर्गीय समाज

1. 'गबन' का रचनात्मक उद्देश्य
2. मध्यवर्गीय परिवार की कथा
3. 'गबन' के पात्र

इकाई –18 'गबन' का औपन्यासिक शिल्प

1. उपन्यास का ढॉचा : कथानक
2. 'गबन' का कथानक : घटना प्रधान, चरित्र प्रधान या नाटकीय
3. शिल्प की प्रविधियॉ
4. आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
5. 'गबन' की भाषा।

।। प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रथम खण्ड झूठा सच

इकाई –01 यशपाल का उपन्यास साहित्य और 'झूठा सच'

1. दादा कॉमरेड
2. देशद्रोही
3. दिव्या
4. पार्टी कॉमरेड
5. मनुष्य के रूप
6. अमिता
7. झूठा सच
8. 'झूठा सच' के बाद के तीन लघु उपन्यास : बारह घंटे, अप्सरा का श्राप और क्यों फॅसे
9. मेरी तेरी उसकी बात

इकाई –02 देश का विभाजन और झूठा सच

1. विभाजन और ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीति
2. विभाजन की राजनैतिक पृष्ठभूमि
3. विभाजन सम्बन्धी अन्य उपन्यास और 'झूठा सच'
4. विभाजन से प्रभावित पंजाब और उसके सामाजिक जन जीवन का अंकन
5. सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, साझा संस्कृति की विरासत

इकाई –03 देश का भविष्य और 'झूठा सच'

1. मोहभंग की व्यापकता
2. सत्ता की राजनीति और कांग्रेसी अवसरवाद
3. पुनर्वास का संघर्ष और प्रक्रिया
4. राजनैतिक मूल्यहीनता के अन्य रूप
5. सरलीकृत आशावाद के अरोप पर विचार
6. उपन्यास के धारावाहिक प्रकाशन के प्रभाव की पड़ताल

इकाई –04 औपन्यासिक महाकाव्य के रूप में 'झूठा सच'

1. औपन्यासिक महाकाव्य की अवधारणाः युगाभिव्यक्ति
2. व्यापकता का संदर्भ
3. जीवन का विस्तार , वैविध्य और सघनता
4. जनजीवन का अंकन
5. कवि दृष्टि के अभाव का आरोप
6. युग की अभिव्यक्ति और समय की कसौटी

द्वितीय खण्ड जिन्दगीनामा

इकाई –05 कृष्णा सोबती का कथा साहित्य और 'जिन्दगीनामा'

1. कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. कृष्णा सोबती का कथा साहित्य
3. कृष्णा सोबती का जिन्दगीनामा

इकाई –06 'जिन्दगीनामा' उपन्यास की अंतर्वस्तु और कथा शिल्प

1. अन्तर्वस्तु और कथाशिल्प का महत्व
2. 'जिन्दगीनामा' : अन्तर्वस्तु
3. 'जिन्दगीनामा' कथाशिल्प

इकाई –07 'जिन्दगीनामा' : प्रमुख पात्र एवं चरित्र चित्रण

1. चरित्र सृष्टि और जीवन दृष्टि का महत्व
2. 'जिन्दगीनामा' में चरित्र सृष्टि
3. 'जिन्दगीनामा' जीवन दृष्टि

इकाई –08 परिवेश और भाषा

1. परिवेश चित्रण और भाषा सृजन का महत्व
2. जिन्दगीनामा में परिवेश चित्रण
3. जिन्दगीनामा : भाषा सृजन

तृतीय खण्ड सूरज का सातवॉ घोड़ा

इकाई –09 धर्मवीर भारती का कथा साहित्य और 'सूरज का सातवॉ घोड़ा'

1. सूक्ष्म अनुभवपरक धरा के उपन्यास
2. धर्मवीर भारती का कथा साहित्य

इकाई –10 औपन्यासिक शिल्प 'सूरज का सातवॉ घोड़ा'

1. 'सूरज का सातवॉ घोड़ा' की अन्तर्वस्तु एवं शिल्प संबंधी पृष्ठभूमि
2. 'सूरज का सातवॉ घोड़ा' का वस्तु संगठन
3. पात्र योजना और उसका यथोचित निर्वाह
4. भाषिक शिल्प

इकाई –11 सूरज का सातवॉ घोड़ा : चरित्र सृष्टि

1. चरित्र चित्रण की प्रविधियॉ
2. स्त्री पुरूष संबंध और ''सूरज का सातवॉ घोड़ा''
3. माणिक मुल्ला और कथानक
4. नारी चरित्र सृष्टि
5. नारी चरित्रों का विद्रोह

इकाई –12 भारतीय की लेखकीय दृष्टि

1. जीवन दृष्टि (समाज और व्यक्ति के प्रति)
2. अन्य रचनाओं में व्यक्त लेखकीय दृष्टि
3. किशोर सुलभ रोमानी (भावुक) दृष्टि की सीमाएं एवं संभावनाएं
4. विचार और रचना का समायोजन

5. 'सूरज का सातवॉ घोड़ा' उपन्यास की अंतःप्रेरणा
6. 'सूरज का सावतॉ घोड़ा' उपन्यास की अंतःप्रेरणा
7. वर्णन प्रधानता और अनुभवपरकता के सामंजस्य में नवीनता
8. नये शैली शिल्प का प्रयोग

चतृर्थ खण्ड – राग दरबारी

इकाई –13 स्वातंत्र्योत्तर भारत और 'राग दरबारी'

1. श्रीलाल शुक्ल के अन्य उपन्यास
2. स्वातंत्र्योत्तर भारत का समाज राजनीतिक परिदृश्य
3. 'राग दरबारी' और स्वातंत्र्योत्तर भारत का यथार्थ

इकाई –14 'राग दरबारी' में व्यंग्य

1. व्यंग्य की परिभाषा और उसकी विभिन्न छायाएं
2. 'राग दरबारी' में प्रयुक्त व्यंग्य का स्वरूप
3. 'राग दरबारी' का यथार्थ और व्यंग्य शैली की सार्थकता
4. 'राग दरबारी' में प्रयुक्त व्यंग्य की सीमाएं

इकाई –15 'राग दरबारी' की अन्तर्वस्तु संरचना शिल्प और

1. 'राग दरबारी' की अन्तर्वस्तु
2 'राग दरबारी' का संरचना शिल्प
3. व्यंग्य शैली और भाषिक भंगिमा
4. भाषा प्रयोग के विविध रूप

इकाई –16 'राग दरबारी के पात्र'

1. 'राग दरबारी' एक सामानयचरित्रोपाख्यान
2. 'राग दरबारी' के विशिष्ट पात्र
3. चरित्रों की प्रतिनिधिकता और अन्य चरित्र
4. 'राग दरबारी' का चरित्र विधान रचनाकार की मूल्य दृष्टि